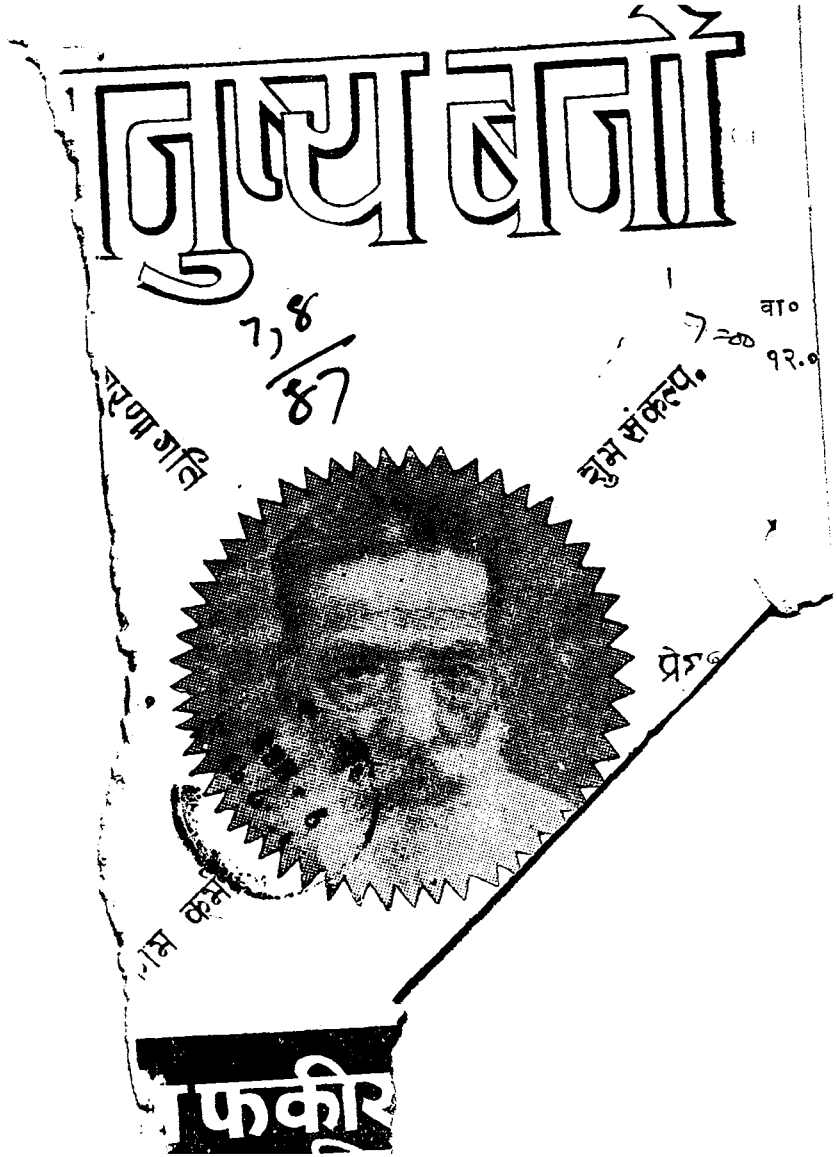

नुष्य बनो

रणागति

शुभ संकल्प

प्रे

ुभ कर्म

फकीर

R. S.

ओ३म पूर्णमद पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमदुच्यते

पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

मनुष्य बनो

वर्ष ३७	जुलाई अगस्त १९८७	अङ्क ९

प्रार्थना

महर्षि शिवव्रतलाल बर्मन

दीन मुझे अति प्यारे लागें मैं दीनों का प्यारा टेक।
जो कोई मेरी शरण में आवे, मैं उसका रखवारा।
करम धरम की आस न राखे, राखे मेरा सहारा॥ दीन०।
किस का योग कहां का जप तप, कैसा ज्ञान विचारा।
जो कोई मुझको भजे निरन्तर, वह आंखों का तारा॥
मैं दीनों के मन में बसता और है भरम पसारा।
वह तो मेरे प्राण के प्यारे, मैं उनका आधारा॥

शब्द

महर्षि शिव व्रतलाल जी महाराज

यह जग नाटकशाला साधु, यह जग नाटकशाला , टक।
राजा रंक फकीर औलिया, दृश्य विचित्र विशाला।
कोई ओढ़े शाल दुशाला, कोई सिर कम्बल काला। साधु०
सुरत ने अद्भुत भेष बनाये, नाचे नाच रसाला।
गावें भाव दिखावें छिन्न छिन्न, खेलें खेल रसाला॥,
ब्रह्मा वेद से रचा जगत को, विष्णु गदा ले पाला।
शिव संहार का साज सजावे, साथ भूत बैताला॥,
नाचे कमला दुर्गा सारद, काली छवि विकराला।
सावित्री का राग गायत्री, सैन बैन का जाला॥,
शंखनाद की धूम मची है, डमरू शोर कराला॥
सारंग सारंग बजी सरंगी, बीन सितार सुहाला॥,
श्रुति धुन है उद्गीत है बानी, ओम ओम का ताला।
श्रोतागन सब सुनने आये, मन में भये बिहाला॥,
साधु दृष्टि साक्षी रूप है, सुख दुख मन से टाला।
जिसने अपना रूप बिसारा, उर उपजा दुख साला॥
साक्षी देखे विमल तमासा, चित रहे सुखी सुखाला।
भूल भर्म में जो कोई आया, सहे कर्म का भाला॥,
रैन सपना हैं जग की लीला, सपना धन और माला।
आंख खुली तब कुछ नहीं दरसा, गुप्त जो देखा भाला॥
राधास्वामी संत रूप धर आये, दीनबन्धु सुदयाला।
प्रेम पियाला हमें पिलाया, सहज किया मतवाला॥,

शब्द

जिन ढूँढा तिन पाया साधु, नाम रतन धन खानी। टे०
मन परवत में खान खुली है, सतगुरु की सहदानी।
ले कुदाली कर भक्ति प्रेम की, खोदे, कोई नर ज्ञानी। सा०
मन को खोद रतन धन पावे, नाम रतन सुखदानी।
दुखदरिद्र फिर निकट न आवे, मन रहे बहु हरषानी॥,
चल सतसंग भेद दे गुरु से, छोड़ कुसंगत प्रानी।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, मैं तो हुआ विज्ञानी॥

तेरी काया नगरी कासों है॥ टेक॥

काया में शिव शम्भु शक्ति है, नाया में अविनासी है।
जो तरि लिंग शब्द धन धारा, सुरत उरधक कासी है।
सुख आनन्द अवस्था वाहन, नन्दी वृष कैलासी है।
चैतन धार बहे नित गंगा, सोई धार अकासी है। का० है
तन लोक में कासी नगरी, न्यारी ज्ञान प्रकासी है।
जल धरि त्रिकुटी से बूंद जो गिरता, शब्द अभी सुखरासी
राधास्वामी नाम जो ले काया में, सच्चा कासी निवासी है।
कासी से जो ऊपर जावे, पक्का साधु उदासी है। का० है
राधास्वामी नाम पाये निज काया, सो सत धाम का बासी है
राधास्वामी नाम जो गावे, उहकी कटी चौरासी है का० है

——

मानव धाम का उदघाटन

सभी सत्संगियों और पाठकों को यह शुभ सूचना दी जाती है कि मानव धाम नगर का शिलन्यास और उदघाटन परम सन्त हजूर मानव दयाल जी के करकमलों द्वारा ५ सितम्बर शनिवार १९८७ को प्रातः ९ बजे से ११ बजे किया जायेगा। स्थान दोहाई गांव गाजियाबाद से मेरठ रोड पर करीब ९ कि० मी० मुख्य सड़क पर दुहाई के पास बस स्टैंड पर स्थान का पता दिया जायेगा। गाजियाबाद से मेरठ जाते समय मानव धाम करीब १ कि० मी० दुहाई से पहले सड़क बाईं किनारे पर स्थित है। बोर्ड लगा हुआ होगा। मेरठ से आते समय यह स्थान दुहाई से एक कि० मी० आगे दाये हाथ पर देहली के २७ कि० मी० वाले पत्थर के निशान पर है।

दशहरे का प्रोग्राराम

वार्षिक फकीर सन्त सम्मेलन हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी एक और दो अक्टूबर (वृहस्पति और शुक्रवार) १९८७ को सलवान पब्लिक स्कूल राजेन्द्र नगर में मनाया जायेगा। पहली अक्टूबर प्रातः ८ बजे से ११ बजे तक और सांय ३॥ बजे से ६ बजे तक दो अक्टूबर प्रातः ८ बजे से ११ बजे तक।

क्रमांक से आगे

इस घटना में फकीर बाबा डाक्टर जगजीत सिंह की प्रार्थना सुनने के लिए कैनाडा के जंगल में स्वयं उपस्थित नहीं थे और पिछले उदाहरणों की भाँति उन्होंने व्यक्तिगत रूप से जगजीत सिंह के बिश्वास को बढ़ावा भी नहीं दिया। फिर की उनका रूप प्रकट हुआ और उस रूप ने जगजीत सिंह की सहायता की, इसकी व्याख्या क्या हो सकती है ?

फकीर बाबा कहते हैं कि अर्थशास्त्र का एक प्रसिद्ध नियम है "मांग और पूर्ति" का नियम (Principle of Demand and Supply) कहते हैं। इस नियम के अनुसार जिस वस्तु की जितनी मांग होती है, उसकी पूर्ति उतने उत्पादन से पूरी की जाती है। ठीक इसी प्रकार आध्यात्मिक जगत् का भी 'मांग और पूर्ति" का नियम है, जिसे आध्यात्मिक मांग और पूर्ति का नियम, (Principle of Spiritual Demand and Supply) कहते हैं। इसके अनुसार जब कोई व्यक्ति ईश्वर, गुरु, इष्टदेव अथवा प्रकृति से किसी भी वस्तु की सच्चे दिल तथा दृढ़ विश्वास से मांग करता है, उस समय उसका मन पूरी तरह से एकाग्र हो जाता है और वह एक प्रबल विचार को जन्म देता है और ईश्वर या इष्ट उस मांग को पूर्ण करने में सहायता देता है। इच्छा करने वाले की एकाग्रता जितनी अधिक होती है, उतनी ही जल्दी उसे सफलता मिलती है। डाक्टर जगजीत सिंह जब ऐसी भयंकर परिस्थिति में थे जहाँ आशा की एक भी किरण दिखाई नहीं देती थी। उस समय उनका मन एक दम फकीर बाबा के ध्यान में इतना तल्लीन हो गया कि वह और सब भूल गये उन्होंने फकीर बाबा से सहायता की मांग की और उस मांग की पूर्ति फकीर बाबा के रूप में प्रकट हुई और जगजीत सिंह की सहायता की।

इस प्राकृतिक व्याख्या का कथन हम अगले अध्याय में करेंगे। यहाँ तो केवल इतना बता देना पर्याप्त होगा कि जिस प्रकार विभिन्न धर्मों, गुरुओं तथा अवतारों के अनुयायी अपने-अपने इष्ट के रूप का

दर्शन करते हैं, उसी प्रकार डा० जगजीत सिंह ने फकीर बाबा के रूप का दर्शन इस लिए किया क्योंकि फकीर बाबा ही उनके इष्ट थे।

परन्तु जो दूसरा उदाहरण यहां दिया जा रहा है वह डाक्टर जगजीत सिंह के उदाहरण से बिलकुल भिन्न है। यह एक ऐसे प्रकार का उदाहरण है जिस में फकीर बाबा का रूप ऐसे लोगों के सामने भी प्रकट होता है जिन्होंने न तो कभी फकीर बाबा का नाम सुना है और न ही कभी उनको देखा है। ऐसा एक नहीं, अनेकों उदाहरण है परन्तु यहां पर केवल एक ही उदाहरण दिया जा रहा है। यह कहानी एक ऐसे निर्धन स्कूल मास्टर श्री रामस्वरूप की है जो भारत के एक छोटे से कस्बे के एक छोटे से स्कूल में पढ़ता था। उसकी आय इतनी कम थी कि उससे उसके परिवार के पालन पोषण में बड़ी कठिनाई आती थी यह घटना १९६९ की हैं जिस कस्बे में रामस्वरूप पढ़ा रहा था वहां डाक्टरों की कमी थी। रामस्वरूप को कुछ बीमारियों का इलाज करना आता था, परन्तु उसके पास डाक्टर की डिग्री या लायसैन्स नहीं था। फिर भी अपने परिवार का पालन-पोषण करने के लिए उसने अपनी आय बढ़ाने के विचार से उस कस्बे के बीमार लोगों के इलाज का काम आरम्भ कर दिया। काफी समय तक वह इस प्रकार बिना लायसैन्स के काम करता रहा। एक दिन वह मुसीबत में फंस गया इस घटना को उसने स्वयं फकीर बाबा को बताया और फकीर बाबा ने इस घटना को 'A word to Americans' नामक पुस्तक में १९७१ में प्रकाशित भी किया हैं। इसी घटना को फकीर बाबा ने अमेरिका से आई हुई एक जिज्ञासु, अति सुन्दर नवयुवती को जो उनके दर्शन करने के लिए आई हुई थी नई दिल्ली में इस प्रकार सुनाया:—

'प्यारी अमेरिकन बेटी ! सुनो मैं एक घटना जो दो वर्ष पूर्व घटी थी, उसे तुम्हें सुनाता हूँ। रामस्वरूप नाम का एक स्कूल मास्टर एक छोटे से कस्बे के एक छोटे से स्कूल में पढ़ाता था। उस का वेतन इतना कम था कि उससे वह अपने परिवार का गुजारा नहीं कर सकता था।

उसको कुछ दवाइयों का ज्ञान था इस लिए उसने उस कस्बे में बिना लायसैन्स के बीमारों का इलाज करना शुरू कर दिया। इससे उसकी आमदनी बढ़ने लगी। कुछ समय तक उस का काम ठीक ठाक चलता रहा। एक दिन कस्बे का एक धनवान व्यक्ति रामस्वरूप के पास अपना इलाज करवाने के लिए आया। रामस्वरूप ने उसको दवाई दी परन्तु उस दवाई से उस धनी व्यक्ति की हालत सुधरने के स्थान पर शीघ्रता से बिगड़ने लगी और एक-आध दिन में ही वह मरने के निकट पहुँचने लगा। जब रामस्वरूप को इसकी सूचना मिली तो वह सन्नाटे में आ गया। उसे मरीज की हालत के साथ-साथ इस बात का भी डर लगने लगा कि वह अब पकड़ा जायेगा क्योंकि वह बिना लायसैन्स के डाक्टरी कर रहा था। रामस्वरूप इतना डर गया कि उसको इस मुसीबत से निकालने का कोई भी उपाय नहीं सूझ रहा था। उसके मन में यही विचार आ रहा था कि यदि धनी व्यक्ति मर गया तो उसे जेल में जाना पड़ेगा और सम्भवतया उसे मौत की सजा मिलेगी। उसका भगवान में पक्का विश्वास था। उसने हाथ जोड़ कर बड़ी श्रद्धा से भगवान से सच्चे दिल से प्रार्थना की कि वह उसे इस मुसीबत से बचायें। भगवान ने सम्भवतया उसकी प्रार्थना सुन ली। उसी समय कमरे में प्रकाश हुआ और इस प्रकाश में से मेरा रूप निकला ऐसा मुझे रामस्वरूप ने स्वयं बताया। मेरे रूप ने रामस्वरूप को कहा, चिन्ता मत करो रामस्वरूप! बाजार जा कर इस दवाई को खरीद कर लाओ और मरीज को दे दो बस ठीक हो जायेगा।'

रामस्वरूप का कहना है कि दवाई का नाम बताकर मेरा रूप अदृश्य हो गया। रामस्वरूप का कहना है कि वह मेरे रूप को देख कर चकित रह गया था। परन्तु इससे पहले उसने ऐसे रूप वाले व्यक्ति को कभी भी देखा नहीं था। फिर भी वह बाजार गया उस नाम की दवा खरीदी और उस मरीज को दे दी। और वह मरीज ठीक हो गया रामस्वरूप जेल में जाने से बच गया, परन्तु यह रहस्य उसकी समझ में

नहीं आया कि मुसीबत में सहायता करने वाला रूप किस महान पुरुष का था। इस घटना के कुछ समय बाद रामस्वरूप एक ऐसे सज्जन से मिले, जिन्होंने उसे मेरे तथा मेरे सत्संग के विषय में बताया और उसे मेरी एक पुस्तक दी जिसमें मेरा चित्र भी छपा हुआ था। रामस्वरूप ने जब उस पुस्तक में छपा हुआ मेरा चित्र देखा तो वह भौंचक्का रह गया और चिल्लाया 'हे भगवान ! यह तो उसी महात्मा का चित्र है जिन्होंने प्रकाश से प्रकट हो कर मुझे दवाई का नाम बताया था।'

कुछ ही समय के बाद रामस्वरूप मुझे मिलने के लिए आया और उसने सारी घटना को मुझे शुरू से आखिर तक विस्तार पूर्वक सुनाया।

चमत्कारी घटनाओ से आत्मानुभूति की ओर।

चमत्कारी घटनाओं को झूठा नहीं कहा जा सकता, परन्तु उनको जीवन का परम लक्ष्य भी नहीं माना जा सकता। इसमें तनिक मात्रा भी सन्देह नहीं कि तथाकथित चमत्कारी घटनाओं से आम संसारी लोगों की श्रद्धा, विश्वास तथा आत्म बल को बल मिलता है। नास्तिक तथा संशयवादी व्यक्तियों को ईश्वरानुभूति की ओर ले जाने का एकमात्र मार्ग सम्भवतया चमत्कारी घटनाओं का घटना ही है। अत चमत्कारों का महत्व है। चमत्कारी घटनाओं के अनुभव के बाद मनुष्य आत्मानुभूति की ओर सम्भवतया शीघ्र जा सकता है। परम सत्ता को प्राप्त करना तो बिरले ही लोग चाहते हैं। आम लोग तो संसारी

भौतिक वस्तुओं की इच्छा रखते हैं इसलिए वे साधु, संतों तथा महात्माओं के दर्शन करने जाते हैं कि उनके आशीर्वाद से उनकी इच्छाएं पूरी हो जायें। सन्त दयालु होते हैं। यद्यपि वे स्वयं परम सत्ता के ज्ञान को प्राप्त कर चुके है और भौतिक वस्तुओं से उन्हें कोई लगाव नहीं होता, फिर भी वे सांसरिक लोगों की भौतिक इच्छाओं को बुरा नहीं बताते। वे जानते हैं कि सभी लोग उस ऊंचे स्तर पर नहीं पहुंच सकते। लोगों की इच्छाओं को पूरा करने के लिए सन्त सच्चे दिल से आशीर्वाद देते हैं और लोगों की इच्छाएं पूरी हो जाती हैं। लोग समझते हैं कि चमत्कार घटित हो रहे हैं।

फकीर बाबा के पास भी सैकड़ों व्यक्ति रोज को ई न कोई सांसरिक इच्छा ले कर उनसे आशीर्वादलेने आते है। फकीर बाबा स्वयं तो मन के स्तर से बहुत ऊपर उठ चुके हैं, वह निज धाम को पहचान चुके हैं, परन्तु परम दयालु होने के कारण वे लोगों को उनकी इच्छापूर्ति के लिए आशीर्वाद देते हैं। उन का विश्वास बढ़ाने के लिए उन्हें प्रसाद भी देते हैं। कई वार तो उनके आशीर्वाद से असम्भव काम भी सम्भव हो जाते हैं और उनमें दृढ़ विश्वास रखने वाले अनुयायी उनके रूप से अजीब-२ काम लेते हैं। ये घटनाएं ऐसी होती हैं कि उनकी कोई प्राकृतिक व्यवस्था देना सम्भव नहीं। कोई भी तर्कशील व्यक्ति या वैज्ञानिक ऐसी घटनाओं के घटने को सत्य नहीं मानेगा परन्तु फिर भी ऐसी घटनाएं घटित हो रही हैं। यहाँ पर एक ऐसी महिला का उदाहरण देना उचित होगा, जिसके साथ ऐसी चमत्कारी घटना घटित हुई।

ऐक अधेड़ महिला ने अपकी बेटी के विवाह पर सैकड़ों लोगों को भोजन के लिए बुलाया। भोजन खाने के बाद सब लोग अपने अपके घर वापिस चले गये। नौकर चाकर भी थके हुए होने के कारण अपने घरों को चले गये। रात के बारह बज चुके थे। रसोई घर में जा कर जब उस महिला ने ढेर सारे जूंठे बर्तनों को देखा तो वह घबड़ा गई। रसोई घर में फकीर बाबा की एक बड़ी तस्वीर टंग रही थी। उसी

महिला ने तस्वीर के आगे हाथ जोड़ कर प्रार्थना कि फकीर बाबा उसे उन बर्तनों को साफ करने के लिए कोई सहायता भेजें। अचानक रसोई घर में प्रकाश हुआ और उसमें से फकीर बाबा प्रकट हुए। उन्होंने इस महिला के बड़े बड़े बर्तन उठाये तथा उनको साफ करने में सहायता दी और उसके बाद वह अदृश्य हो गये। ऐसी घटना की आप क्या व्याख्या देंगे।

फकीर बाबा ने अपने जीवन में सैकड़ों निःसन्तान स्त्रियों को पुत्र होने का आशीर्वाद दिया, जिससे उनके सन्तान हो गई। कई स्त्रियों में जो फकीर बाबा के पास होशियारपुर नहीं जा सकी, उन्होंने उनकी फोटो के आगे खड़े हो कर उनसे सन्तान प्राप्त करने की प्रार्थना की। फकीर बाबा के आशीर्वाद से उन्हें भी पुत्र उत्पन्न हुए। कुछ ऐसी महिलाए भी थी जिनकी आयु पचास वर्ष से ऊपर थी और जिनको मासिक धर्म भी नहीं होता था, उन्हें भी पुत्र हुए। एक ऐसी घटना के विषय में फकीर बाबा ने १९६९ में अमेरिका से आये हुए ए० आर० ई० के शिष्ट मण्डल को बताया। उस ग्रुप के एक विद्वान व्यक्ति ने फकीर बाबा से प्रश्न किया. 'हम यह मानते हैं कि मानसिक शक्ति की आन्तरिक आध्यात्मिकता के विकास से होता है। परन्तु कभी कभी देखने में आता है कि कुछ लोगों के पास ऐसी शक्तियाँ या सिद्धितां होती हैं। जो आध्यात्मिकता से कोसों दूर हैं। ऐसा क्यों होता है।

फकीर बाबा ने उत्तर दिया, 'मैं सिद्धियों के अस्तित्व में विश्वास रखता हूँ। किन्तु यह मानसिक शक्ति केवल उन लोगों पर प्रभाव डाल सकती है, जो इसके पात्र होते हैं। मैं आपको इस सन्दर्भ में एक उदाहरण देना चाहता हूँ। इन्दौर में मेरे एक अनुयायी सेठ मोतीलाल की आयु ५५ वर्ष की थी और उसकी पत्नी ५० वर्ष की। जिस समय वह मेरे पास पुत्र प्राप्ति के लिए आशीर्वाद लेने आये डाक्टरों ने उन्हें बता रखा था कि किसी शारीरिक खराबी के कारण सेठ मोतीलाल की पत्नी कभी सन्तान पैदा नहीं कर सकती। पति, पत्नी मेरे पास आए। पत्नी

फूट-फूट कर रोने लगी बोली कि उनकी इतनी सम्पत्ति, इतना धन, इतना व्यापार बेटे के बगैर व्यर्थ हैं। उन्हें पुत्र चाहिए। उन्होने मुझे प्रसाद और आशीर्वाद देने की प्रार्थना की। मुझे सेठ मोतीलाल की पत्नी पर बहुत दया आई। उस समय मेरे निकट एक आम पड़ा था। मैंने उस आम को उसे देते हुए कहा, बेटी इसे खा लो मालिक की कृपा से शीघ्र ही तुम्हें पुत्र होगा।'

वह महिला आम लेकर उस डाक्टर के पास गई जिसने उसे सन्तान पैदा करने के अयोग्य बताया था और बोली, 'डाक्टर बाबू ! तुम कहते हो कि मेरे सन्तान नहीं हो सकती। परन्तु यह देखो यह आम है जो बाबा ने प्रसाद के रूप में दिया है। मैं इसे खा रही हूं। अब मैं शीघ्र ही गर्भवती हो जाऊंगी और लड़के को जन्म दूंगी, इसमें रत्ती भर भी सन्देह नहीं है। फकीर बाबा ने ऐसा ही कहा है।' वास्तव में ही उसे एक वर्ष के बाद लड़का पैदा हो गया और मैंने सका नाम भी श्री भगवान रखा। परन्तु मेरी यह बात सुनो। मेरी अपनी लड़की का विवाह किये हुए बीस वर्ष से भी अधिक हो गये हैं और उसके कोई सन्तान नहीं हुई। मैंने एक बार नहीं अनेक बार उसे भी इसी भावना से प्रसाद दिया जैसे कि मैंने सेठ मोतीलाल की पत्नी को दिया था। परन्तु मेरी लड़की के कोई सन्तान नही हुई। बात असल में यह है कि मन की शक्ति की सफलता का मूल कारण है मनुष्य का अपना ही विश्वास। मेरी लड़की का अपना विश्वास सेठ मोतीलाल की पत्नी की भांति दृढ़ नहीं रहा होगा। इसमें रत्ती भर भी सन्देह नहीं कि मनुष्य की इच्छा शक्ति जरूर काम करती है, परन्तु वह पूर्णतया सफल उस समय होती है, जब विश्वास दृढ होता है। जहां पर विश्वास डगमगा जाता है, वहां पर सन्त भी सहायता नहीं कर सकते।

फकीर बाबा ने उपरोक्त घटना की व्याख्या १९६९ मे की थी। उस समय तक उन्हें अनेक ऐसे अनुभव हो चुके थे, जिनसे उनका यह दढ विश्वास हो गया था कि विश्वास में शक्ति होती है और चमत्कार

तो केवल आध्यात्मिक उन्नति का प्रभाव मात्र होते हैं। इसलिए चमत्कारों को ही सब कुछ समझ कर वहीं नहीं रुक जाना चाहिए। जो लोग चमत्कारों से इतने प्रभावित हो जाते हैं कि उनसे आगे बढ़ने की वह बात ही नहीं सोचते, उनकी आध्यात्मिक उन्नति रुक जाती है। वे परम लक्ष्य तक नहीं पहुँचते, वे जन्म-मरण के बन्धन से छुटकारा नहीं पा सकते। फकीर बाबा लोगों का विश्वास पक्का करने के लिए सदा उनकी पूर्ति के लिए आशीर्वाद भी देते हैं। परम दयालु फकीर बाबा के दो ऐसे उदाहरणों को यहाँ देना उचित होगा, जिनमें उन्होंने दुःखी लोगों की सहायता की ओर उन्हें आशीर्वाद दिया। एक उदाहरण एक सिक्ख पति-पत्नी का है, जिन्हें ज्योतिषियों ने बता दिया था कि उनके भाग्य में सन्तान नहीं है। वे दुःखी हो कर फकीर बाबा के पास आये ओर उनसे प्रार्थना की कि वे उन्हें सन्तान होने का आशीर्वाद दें। दूसरा उदाहरण दक्षिणी भारत के एक ऐसे धनवान व्यक्ति का है, जो मृत्यु शैय्या पर पड़ा था और जिनको फकीर बाबा ने मौत के मुंह से निकाला था। इन उदाहरणों में फकीर बाबा सत्संगियों के विचार को बदलने तथा सहायता करने में किस प्रकार सफल हुए इसका ब्यौरा इस प्रकार है।

फकीर बाबा दूसरी बार रिटायर होने के बाद जब होशियारपुर में बस गये तो उन्होंने अपने गुरु की आज्ञा का पालन करने के लिए और दुःखी लोगों की सहायता करने के लिए लगातार सत्संग देना आरम्भ किया। वह इस सत्संग को पैसा कमाने का साधन नहीं बनाना चाहते थे, इसलिए अपने तथा अपने परिवार का चर्चा चलाने के लिए उन्होंने एक आटे की चक्की पर मुन्शीगीरी का काम शुरु कर दिया। वह काम इसलिए करते थे क्योंकि उनकी पैन्शन का पैसा घर का खर्चा चलाने के लिए पर्याप्त वहीं था। वह इस काम को भी करते थे और प्रतिदिन सत्संग भी देते थे। उनके सत्संग इतने सर्वप्रिय हो गये कि उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गई। लोग दूर-दूर से आ कर उनके

सत्संग में आते परम लक्ष्य की प्राप्ति अथवा सच्चे ईश्वर की प्रतीति कैसे हो. इसकी चाह तो बहुत कम व्यक्तियों में थी, परन्तु अधिकतर लोग तो अपनी सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए उनसे आशीर्वाद लेने आने लगे। फकीर बाबा के दिल से दिये गये आशीर्वाद से लोगों की समस्याएं सुलझने लगीं और उन्हें फकीर बाबा के दर्शन होने लगे। लोगों ने इन्हें चमत्कारी बाबा कहना आरम्भ कर दिया परन्तु फकीर बाबा तो सत्य के पुजारी हैं। उन्होंने सदा अपने सत्संग में यह बताया था कि वह कभी किसी की सहायता करने के लिए प्रकट नहीं होते। जो लोग मुशीबत के समय उनके रूप को देखते हैं, यह सब उनके अपने ही विश्वास के कारण होता है। फकीर बाबा इन सत्संगों को देने से पहले ही जान चुके थे कि चमत्कारों का एक मात्र कारण व्यक्ति का अपना ही विश्वास होता है। इसलिए चमत्कारों को जीवन का लक्ष्य न मान कर वे लोगों को चमत्कारों से परे जाने की शिक्षा देते हैं। परन्तु अधिकतर लोग तो धन, सन्तान, यश इत्यादि चाहते हैं और उनका विश्वास उस समय दृढ़ होता है जब वे चमत्कारी घटनाओं का अनुभव करते हैं, उनकी इच्छाओं की पूर्ति हो जाती है। फकीर बाबा परम दयालु हैं। वे सभी लोगों को उनके विश्वास के अनुसार उनकी इच्छाओं की पूर्ति के लिए इसलिए आशीर्वाद देते हैं कि किसी भी व्यक्ति की श्रद्धा टूट न जाय। सच्चे सन्त का यह स्वभाव होता है। कि वह सभी सत्संगियों के दुःखों को दूर करे। फकीर बाबा एक युग-पुरुष तथा सच्चे सन्त होने के नाते सभी की इच्छाओं की पूर्ति के लिए सच्चे दिल से आशीर्वाद देते हैं। लोगों की इच्छाएँ पूरी हो जाती हैं, उनका फकीर बाबा में विश्वास बढ़ जाता है और वह नियमित रूप से उनके सत्संगों में आना आरम्भ कर देते हैं। लगातार सत्संग में आने से उनमें परिवर्तन होना आवश्यक है। सत्संग में नियमित रूप से ठीक समय पर आने से उनमें अनुशासन भी आ जाता है। एक सच्चा और अनुशासन पर चलने वाला सत्संगी सच्चे सन्त के सत्संग से लाभ उठा

कर निश्चित रूप से अपनी इच्छाओं की पूर्ति कर सकता है। इन्हीं सत्संगों के दौरान में ही उस सिक्ख पति- पत्नी की पुत्र सम्बन्धी इच्छा की पूर्ति से फकीर बाबा ने यह प्रमाणित कर दिया है कि अनुशासन जीवन के लिए कितना जरूरी है।

इस सिक्ख पति पत्नी ने अपनी जन्म कुण्डली को अनेक बार कई ज्योतिषियों को दिखाया था और सब ने उन्हें यही बताया था कि उनके भाग्य में सन्तान नहीं है। उन्होंने सन्तान प्राप्ति की प्रबल इच्छा फकीर बाबा के पास खींच लाई। उन्होंने फकीर बाबा से बार बार प्रार्थना की कि उन्हें लड़का चाहिए। फकीर बाबा ने उन्हें बताया कि जब ज्योतिषियों ने बता दिया कि उनको सन्तान नहीं होगी तो उन्हें भाग्य को स्वीकार करके शान्तिपूर्वक जीवन बिताना चाहिए। किन्तु पत्नी फूट फूट कर रोने लगी और बोली, 'बाबा तुम सब कर सकते हो। मुझे आशीर्वाद दो तथा प्रसाद दो।' दयालु फकीर बाबा उसका रोना देख नहीं सके। बोले, 'देखो बेटी ! तुम्हारी किस्मत में बच्चा नहीं हैं, ज्योतिषी झूठे नहीं हो सकते परन्तु तुम जिद् कर रही अच्छा मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ कि तुम्हारा बच्चा हो जाये। परन्तु भाग्य की रेखा को कौन मिटा सकता है बच्चा हो जायेगा तुम्हें, परन्तु बच्चा पैदा होते ही तुम मर जाओगी। क्या तुम मरने के लिए तैयार हो ? वह स्त्री सच्चे दिल से सन्तान चाहती थी इसलिए वह बोली 'बाबा मैं मरने के लिए तैयार हूँ, मुझे एक बार अपने बच्चे का मुँह देखना हैं। मुझे प्रसाद दो बाबा ! मुझे प्रसाद दो, मुझे लड़का चाहिए।'

फकीर बाबा ने उसे प्रसाद दिया और कुछ ही महीने के बाद वह गर्भवती हो गई। वह स्त्री फूली नहीं समाती। परन्तु जब बच्चा पैदा होने में केवल तीन महीने बाकी रह गये, तो उस स्त्री का पति फकीर बाबा के पास गया और रो-रो कर प्रार्थना करने लगा, 'ऐ मेरे दयालु बाबा ! आपकी दया तथा आशीर्वाद से हमें बच्चा प्राप्त होने वाला

है, परन्तु बच्चा पैदा होते ही मेरी पत्नी मर जायेगी। बाबा ! मैं पत्नी को अपने सामने मरते कैसे देख सकता हूं ? मेरे ऊपर दया करो बाबा दया करो। मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि मुझे पत्नी का जीवन दान दो। मेरी पत्नी को मृत्यु से बचाओ बाबा और आशीर्वाद दो कि बच्चा और माँ दोनों जीवत रहें'।

फकीर बाबा ने कहा, 'ठीक बात है तुम्हारी स्त्री मरेगी नहीं और बच्चा भी ठीक रहेगा परन्तु उसके लिए तुम्हें एक शर्त पूरी करनी होगी। उसने उत्तर दिया, 'मैं हर शर्त को पूरा करने के लिए तैयार हूं बाबा।'

फकीर बाबा ने उस सिक्ख युवक को कहा 'तुम आज से लेकर बच्चा पैदा होने के समय तक २४ घन्टे में एक बार मुझे अवश्य मिला करो।'

सिक्ख युवक फकीर बाबा के घर से काफी दूर रहता था। परन्तु फकीर बाबा की आज्ञा को उसने भगवान की आज्ञा से कम नहीं समझा। पूरे तीन महीने तक प्रतिदिन वह फकीर बाबा के दर्शन करता रहा। आंधी हो या तूफान उसने कभी इस अनुशासन को नहीं तोड़ा। सदा ठीक समय पर पहुंच कर बाबा के दर्शन किये। तीन महीने के बाद उसकी पत्नी ने एक स्वास्थ बालक को जन्म दिया और फकीर बाबा की कृपा से बच्चा तथा बच्चे की माँ दोनों जीवित रहे और सिक्ख दम्पति फकीर बाबा के परम भक्त बन गये।

इस उदाहरण से स्पष्ट हो जाता है कि चमत्कारी घटनाएँ उस समय घटित होती हैं जब व्यक्ति का विश्वास दृढ़ होता है और वह किसी प्रकार के अनुशासन का पालन करता है। क्योंकि चमत्कार व्यक्ति के अपने ही मन की शक्ति के कारण होते हैं, इस लिए अनुशासन मन को एकाग्र करने में काफी सहायता देता है।

अब यहाँ दूसरे उदाहरण का उल्लेख करना उचित होगा। यह घटना लगभग २५ वर्ष पूर्व की है। फकीर बाबा दक्षिण भारत में हैद-राबाद के निकट एक नगर में सत्संग करा रहे थे। उस सत्संग में

बोरगवा महादेव नाम का एक अति धनवान सेठ भी उपस्थित था। बोरगवा महादेव का व्यापार काफी बड़ा था और पूरे प्रदेश में फैला हुआ था। उसके लड़के बड़ी उम्र के थे, जो उसके व्यापार को सम्भालने में काफी सहायता देते दे। बोरगवा महादेव को काफी बीमारियाँ हुई थीं, जिनका डाक्टरों के पास कोई इलाज नहीं था।

सत्संग समाप्त होने के बाद बोरगवा महादेव फकीर बाबा के पास आया और कहने लगा, 'ऐ मेरे मालिक ! मैं अपने पिछले जन्मों के बुरे कर्मों के कारण बहुत सी बीमारियों से पीड़ित हूँ। मैंने सुना है कि सन्त हमें हमारे बुरे कर्मों से छुटकारा दिला सकते है। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मेरे बुरे कर्मों का नाश करके मेरा उद्धार कीजिये। मेरी बीमारियों का नाश कीजिए।

दयालु फकीर बाबा ने उत्तर दिया, 'बोरगवा महादेव ! मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ कि मालिक तुम्हें ठीक कर दें। लेकिन तुम्हें बीमारियों से छुटकारा पाने के लिए, उसके बदले में कुछ दान देना होगा।

बोरगवा महादेव ने सोचा शायद फकीर बाबा अपना आश्रम बनाने के लिए एक दो लाख रुपये की मदद चाहते होंगे। उसके पास धन की कमी तो थी नहीं। उसने उसी सत्संग में बैठे हुए अपने जवान बेटे की ओर देखा और यह जानना चाहा कि वे ऐसा दान देने के लिए तैयार हैं या नहीं। उनके बेटे पिता का इशारा समझ गए और मुस्करा कर उन्होंने इशारा किया। बेटों के हाँ के बाद बोरगवा महादेव खुश हो कर बोले, 'दयालु मालिक ! आप हुक्म फरमाईए। दास आपकी सेवा में हाजिर है।'

फकीर बाबा तो धन का दान चाहते ही नहीं थे, वह तो कुछ और ही चाहते थे। उन्होंने कहा, तो बोरगवा महादेव ! जल्द ही किसी पुरोहित को बुलाओ।' फौरन ही एक पुरोहित को बुलाया गया। फकीर बाबा ने बोरगवा महादेव को कहा, हाथ में जल लो। पुरोहित जो मन्त्र पढ़ेंगे। जब मंत्र पढ़ा जा रहा हो, उस समय तुम अपने पिछले

जन्मों और इस जन्म के सभी बुरे कर्मों का संकल्प मुझे दे देना।'

फकीर बाबा की इस बात को सुनते ही सभा में सन्नाटा सा छा गया। बोरगवा महादेव और उसके जवान बेटे भी भौंचक्के से रह गये। वे तो दान का मतलब धन का दान ही समझ रहे थे, किन्तु ऐसे अनोखे दान के बारे में तो उन्होंने कभी सुना ही नही था। कुछ समय के लिए सभी शान्त रहे, किन्तु थोड़े समय के बाद ही सभा में से कुछ सत्संगी चिल्लाए, ऐसा कभी मत करना बोरगवा महादेव, ऐसा मत करना। यदि तुम ऐसा संकल्प करोगे तो तुम्हारे सभी रोग परम दयाल जी महाराज को लग जायेंगे। इतने खुदगर्ज मत बनो बोरगवा महादेव। यह महा पाप है।'

इससे पहले कि बोरगवा महादेव कुछ बोलें, फकीर बाबा ने जल्द ही पुरोहित जी को मन्त्र पढ़ने का हुक्म दिया और साथ ही साथ बोरगवा महादेव को हाथ में जल लेने को कहा। पुरोहित जी ने मन्त्र पढ़ना शुरू किया और फकीर बाबा ने बोरगवा महादेव के हाथ का जल अपने हाथ में लेते हुए कहा, बोरगवा महादेव ! तुम अपने पिछले तथा इस जन्म के सभी बुरे कर्मों का फल मुझ दे दो। मैं उन्हें अपने ऊपर लेता हूँ। सब बुरे कर्मों को मुझे देने के बाद, अगर तुम्हारे कुछ अच्छे कर्म हैं, तो वही बाकी अच्छे कर्म तुम्हें ठीक कर देंगे।

वास्तव में ऐसा ही हुआ। बोरगवा महादेव धीरे धीरे सभी बीमारियों से मुक्त हो गए। उसके बाद वह २० साल तक स्वस्थ रहे और अन्त में उनकी स्वाभाविक मौत हुई। बोरगवा महादेव और उनके बेटों की फकीर में बहुत श्रद्धा रही, किन्तु फकीर बाबा ने कभी उनसे आश्रम बनाने या किसी और काम करने के लिए मदद नहीं माँगी।

चमत्कारों की यह व्याख्या कि विश्वास, श्रद्धा और अनुशासन से मन की शक्ति को बढ़ावा दिया जा सकता है और मन की शक्ति ही बड़े से बड़े चमत्कार करा सकती है सन्तोषजन कहै। यह व्याख्या इतनी व्यापक है कि इससे हम सभी धर्मों में घटित होने वाली चमत्कारी

घटनाओं को समझ सकते हैं और किसी भी चमत्कारी घटना को झूठा नहीं बता सकते।

ऊपर दिए उदाहरणों में फकीर बाबा खुद घटनास्थल पर मौजूद थे और उन्होंने सत्संगियों के यकीन को बढ़ावा दिया था। किन्तु ऐसे उदाहरण भी देखने में आए हैं, जहाँ पर फकीर बाबा न तो घटनास्थल पर मौजूद थे और न ही उन्होंने यकीन करने वालों को बढ़ावा दिया था, फिर भी चमत्कारी घटनाएँ घट ही गई। ऐसे कुछ उदाहरण पहले भी दिए जा चुके हैं, यहाँ पर दो और उदाहरण देना उचित रहेगा। उनमें से एक उदाहरण ऐसा है जिसमें फकीर बाबा कैनेडा के एक खतरनाक जंगल में प्रकट हुए और दूसरे उदाहरण का घटनास्थल भारत का एक छोटा सा गाँव है' जहाँ एक ऐसे स्कूल मास्टर ने फकीर बाबा के रूप के प्रकट होने से लाभ उठाया, जिसने न तो कभी फकीर बाबा का नाम सुना था और न ही कभी उन्हें देखा था। ऐसे चमत्कारों की व्याख्या कुछ और ही हो सकती है।

यों तो अमेरिका, अफ्रीका और भी कई देशों में फकीर बाबा के रूप प्रकट होने की कई चमत्कारी घटनाएँ घटित हुई हैं, किन्तु जिस चमत्कारी विदेशी घटना का उल्लेख यहाँ किया जा रहा है, वह हाल ही में पंजाब के भूतपूर्व मंत्री डाक्टर जगजीत सिंह के अनुभव से सम्बन्धित है। डॉक्टर जगजीत सिंह पंजाब सरकार की ओर से कैनेडा में दोरे पर थे। उनका कहना है कि वह कुछ और आदमियों के साथ एक हैलिकाप्टर से कैनेडा के जंगलों का निरीक्षण कर रहे थे। किसी कारण हैलीकाप्टर में कुछ खराबी हो गई और हैलीकाप्टर को एक खतरनाक जंगल में उतरना पड़ा। सभी लोग परेशान थे। वहाँ से जिन्दा बच निकलने का कोई भी उपाय नहीं सूझ रहा था। डॉक्टर जगजीत सिंह इस परेशानी में उस खतरनाक जंगल में चलने लगे और अपने साथियों से कुछ दूर निकल गए। वह मन ही मन सब के बचाव के लिये प्रार्थना करने लगे। फकीर बाबा में उनका यकीन था। अत:

डॉक्टर ने फकीर बाबा से सच्चे दिल से प्रार्थना की कि वह उन्हें इस संकट से बचाएँ। फौरन ही उनके सामने प्रकाश हुआ और उसमें से फकीर बाबा प्रकट हो कर बोले, 'जगजीत सिंह ! चिन्ता मत करो ! इसी जगह पर डटे रहो। आधे घण्टे के बाद एक दूसरा हैलीकाप्टर यहां आयेगा और आप सबको महफूज जगह पर ले जायेगा। यह कहने के बाद वह फौरन अदृश्य हो गये।

ठीक आधे घण्टे के बाद एक हैलीकाप्टर वहां आया और सबको एक महफूज जगह पर ले गया। इस चमत्कारी घटना घटने के बाद डॉक्टर जगजीत सिंह इंगलैण्ड गए और वहां से उन्होंने इस अनोखी घटना की सूचना फकीर बाबा को दी। भारत आने पर डॉक्टर जगजीत सिंह जो न ही केवल एक सफल डॉक्टर हैं, बल्कि माने हुए समाज सेवी भी हैं' होशियारपुर गए और फकीर बाबा के दर्शन करने के बाद इसी घटना को खुलकर बताया।

फकीर बाबा ने हमेशा की तरह इस घटना में भी अपने मौजूद होने से इनकार किया और डॉक्टर साहब को कहा, 'मैं तो उस समय होशियारपुर हीं था, कैनेडा कैसे पहुंच सकता था। मुझे तो यह भी मालूम नहीं था कि आप कैनेडा गए हुए थे।'

इस उदाहरण में डॉक्टर जगजीत सिंह की प्रार्थना सुनने के लिए फकीर बाबा स्वयं कैनेडा में मौजूद नहीं थे और पिछले उदाहरणों की तरह उन्होंने जगजीत सिंह के सामने आ कर उनके यकीन को बढ़ावा भी नहीं दिया था। फिर भी जगजीत सिंह ने फकीर बाबा के रूप को देखा और उस रूप ने उससे बात भी की और बताया कि एक दूसरा हैलीकाप्टर आ रहा है। इस सब में क्या रहस्य है ? फकीर बाबा कहते हैं कि इस घटना मे कोई रहस्य नहीं है। यह तो बहुत सीधी सी बात है। यह है आध्यात्मिक मांग और पूर्ति का नियम (Law of Sbiritual Demand and Supply। फकीर बाबा कहते हैं कि जब कोई व्यक्ति ईश्वर या प्रकृति से किसी चीज की सच्चे दिल से

माँग करता है, उस समय उनका मन इकट्ठा हो कर एक जोरदार विचार को प्रकट करता है। तब ईश्वर का प्रकृति की उचित मदद के द्वारा माँग की पूर्ति की जाती है। माँग जितनी ही जबरदस्त होती है, उसकी पूर्ति उतनी जल्दी होती है। उपर दिए गए उदाहरण में जगजीत सिंह की इस जबरदस्त माँग की पूर्ति के लिए फकीर बाबा उसे उस मुसीबत से बचाएँ और उस माँग की पूर्ति के लिए फकीर बाबा के रूप को उस खतरनाक जंगल में उतरना पड़ा। यह एक प्राकृतिक व्याख्या है। जिस तरह भिन्न-भिन्न धर्मों के अनुयायी अपने-अपने गुरुओं, अवतारों या इष्ट के दर्शन करते है, ठीक उसी तरह डॉक्टर जगजीत सिंह ने अपने इष्ट फकीर बाबा के रूप के ही दर्शन किए। इसमें कोई रहस्य की बात नहीं है।

किन्तु यह व्याख्या उन उदाहरणों पर कैसे लागू हो सकती है, जिनमें फकीर बाबा का रूप उन लोगों के सामने प्रकट होता है, जिन्होंने न तो फकीर बाबा को कभी देखा है और न ही कभी उनका नाम सुना है। ऐसे कई उदाहरण फकीर बाबा के जीवन से सम्बन्धित हैं। उनमें से एक उदाहरण एक मिडल स्कूल के मास्टर रामस्वरूप का है। यह घटना १९६९ में उस समय घटी जब रामस्वरूप एक छोटे से गाँव के एक मिडल स्कूल में पढ़ा रहा था उस गाँव में डाक्टरों की कमी थी। रामस्वरूप को दवाइयों का कुछ ज्ञान था। अपनी आमदनी को बढ़ाने के लिए वह बिना लाइसेन्स के उस गाँव के लोगों का इलाज करने लगा। कुछ समय तक तो उसका यह धन्धा अच्छा चलता रहा। किन्तु एक दिन उस गाँव के एक धनी व्यक्ति का इलाज करते समय, उसने उसे ऐसी दवाई दी, जिससे व्यक्ति की हालत बजाय सुधरने के एकदम बिगड़ गई और वह मृत्युशय्या पर था। उस धनवान व्यक्ति का बेटा आधी रात के समय दौड़ा-दौड़ा रामस्वरूप के घर यह सूचना देने गया। यह बात सुनते ही रामस्वरूप के होश उड़ गए। उसने सोचा क्योंकि वह बिना लाइसेन्स के डाक्टरी कर रहा था, अगर उस धनवान

व्यक्ति की मौत हो गई तो उसे जरूर जेल में डाल दिया जायेगा। वह इतना घबरा गया कि उसे अपने बचाव का कोई उपाय नहीं सूझ रहा था। उसने मन ही मन भगवान से सच्चे दिल से प्रार्थना की कि वह उसे इस मुसीबत से बचाएँ। अचानक रामस्वरूप के कमरे में प्रकाश हुआ और उस प्रकाश में से एक सुन्दर महात्मा का रूप प्रकट हुआ और बोला, 'रामस्वरूप ! चिन्ता मत करो। सुबह होते ही यह इन्जेक्शन खरीद कर रोगी को लगा दो, वह ठीक हो जायेगा और तुम मुसीबत से बच जाओगे।'

रामस्वरूप उस प्रकाश और प्रकाश में से उस अति सुन्दर महात्मा के रूप को, जिनको वह जानता तक नहीं था देखकर दंग रह गया। उसने सुबह होते ही उस महात्मा द्वारा बताए गए इन्जेक्शन को खरीद कर रोगी को लगा दिया। रोगी ठीक हो गया। रामस्वरूप मुसीबत से तो बच गया, किन्तु वह उस दयालु महात्मा के बारे में कुछ नहीं जान पाया।

कई महीने के बाद एक दिन, एक मित्र के घर उसने मानव मन्दिर की एक मासिक पत्रिका देखी, जिनमें फकीर बाबा का एक चित्र भी था। उस चित्र को देख कर वह भौचक्का सा रह गया। यह चित्र तो उसी महान व्यक्ति का था जिन्होंने उसे मुसीबत से बचाया था। उसने अपने मित्र से उस महात्मा का नाम और पता पूछा और सीधा होशि, यारपुर उनके दर्शन करने के लिए रवाना हो गया। फकीर बाबा ने इस घटना को स्वयं बैटी एटकिनसन नामक एक अति सुन्दर अमेरिकन युवती को सुनाया, जो १९७० में उनके दर्शन करने के लिए भारत आई थी। इस घटना को बाद में फकीर बाबा की एक पुस्तक, 'A word to Americans' में भी प्रकाशित किया था।

इस प्रकार के अनुभव, जिनमें ऐसे लोग फकीर बाबा के रूप के दर्शन करते हैं, जो उनके नाम तक को भी नहीं जानते क्या हो सकती है।? एक बार मैंने फकीर बाबा से इस बारे में पूछा था। उन्होंने

बताया कि आदमी जब मजबूरी की हालत में होता है और उस मुसीबत से बाहर निकलने का कोई भी रास्ता नहीं होता, सभी दरवाजे बन्द हो जाते हैं, तो वह कोई भी सहारा न होने के कारण ईश्वर की ही शरण में चला जाता है। वह अपने अहं को भूल जाता है। उसका मन, उसकी बुद्धि, उसकी ऊंची शिक्षा और सभी सांसारिक सफलताएँ मानो बेकार सी लगती हैं। उसे लगता है वह एकदम एक बेकार सा आदमी हैं। ऐसी हालत में उसका झूठा अभिमान सब समाप्त हो जाता है और वह पूरी तरह से ईश्वर या परम सत्ता की शरण में चला जाता है। तब आध्यात्मिक माँग तथा पूर्ति के नियम के मुताबिक, उस व्यक्ति की माँग को ईश्वर या परम सत्ता द्वारा पूरा किया जाता है और ऐसी ऐसी चमत्कारी घटनाएँ घटती हैं जिन्हें देख कर हैरानी होती है।

इस बात का सच्चा ज्ञान न होने से कि चमत्कारी घटनाओं का घटना मनुष्य के अपने मन पर ही निर्भर है, मनुष्य को बाहरी शक्ति या ईश्वर के किसी खास रुप पर अन्धविश्वास हो जाता है और यही खास रुप उस मनुष्य की मुसीबत के समय मदद करता है। मैंने एक बार फकीर बाबा से पूछा, 'पिता जी ! मैं आपसे यह पूछना चाहता हूँ कि जिन व्यक्तियों ने न तो कभी आपको देखा है और न कभी आपका नाम सुना है उनको मुसीबत के समय आपका ही रूप क्यो दिखाई देता है ?'

इस बात का उत्तर फकीर बाबा ने यूँ दिया 'मैं भी सोचता हूं कि मुझे न जानने वाले व्यक्तियों को भी मेरे रुप के दर्शन क्यों होते हैं। मेरा विचार है कि कोई भी घटना विना कारण के नहीं घटती। मुझे लगता है कि ऐसे व्यक्ति भी जो कहते हैं कि वे मुझे जानते तक भी नहीं जरुर मुझे किसी न किसी रुप में जानते होंगे। हो सकता है कि उन्होने मुझे नही देखा होगा और बाद में उन्हें भूल गया होगा कि उन्होंने मुझे कहीं देखा था हो सकता है कि उन्होंने मेरे बारे मैं कहीं पढ़ा या सुना होगा जो बाद में उन्हें भूल गया होगा। अगर इस जबाव से भी

तुम्हें तसल्ली नहीं हुई तो सुनो, ऐसे व्यक्ति जरूर पिछले जन्मों में मेरे से मिले होंगे और उनकी पिछले जन्मों की याद उनके अचेतन मन में धुँधले रुप में अब भी मौजूद होगी, तभी वह मेरे रुप को देखते हैं।

मैं फकीर बाबा की इस व्यवस्था राजी हो गया। फकीर बाबा की चमत्कारी घटनाओं की व्यवस्था से दो बातें स्पष्ट होती हैं। एक तो यह कि ईश्वर को परम तत्व होने के नाते किसी एक खास रुप रंग से सम्बन्धित नहीं किया जा सकता। धर्मों और मतों के जो आपसी झगड़े फसाद हैं वह राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, मूसा, और ईसा आदि के रुपों को अलग-अलग मान लेने के कारण ही हैं। असल में देखा जाय तो यह भेदभाव झूठे हैं। दूसरी बात यह कि मनुष्य का परम लक्ष्य न केवल चमत्कारों या करिश्मों से परे है, बल्कि उनके आधार से भी परे है। असल में बात यह है कि असली ईश्वर या परम तत्व न अवतार है, न गुरु, न ईश्वर का रुप। वह तो एक ऐसा तत्व है, जो इन सबसे परे है। इस परम तत्व को केवल उस समय समझा जाता है जब एक सच्चे सन्त का अनुभव सभी धर्मों, सभी मतों और रीति रिवाजों से ऊपर उठ जाता है और वह लोगों को सच्चाई बता देता है। किन्तु अगर इस सत्य को सभी लोगों को सीधी सादी भाषा में बता दिया जाए, तो धर्म के ठेकेदारों, मठाधीशों और भिन्न-भिन्न मतमतान्तरों में भिन्नता बताने वाले और बढ़ावा देने वाले महात्माओं को आर्थिक हानि होगी या हो सकती है। इसलिए ऐसे लोग पूरे सत्य को लोगों को बताते नहीं।

फकीर बाबा ने जिस निडरता से ईश्वर के सच्चे अनुभव को लोग के सामने खोल कर रख दिया है वह काबिले तारीफ है। फकीर बाबा सत्य के अवतार हैं। उनके जीवन का लक्ष्य लोगों के अज्ञान को दूर करके सच्चे ईश्वर की ओर ले जाना है। उनके अनुसार, 'धर्म के बड़े बड़े ठेकेदारों ने संसार के भोले भाले लोगों को चमत्कारी अनुभवों या करिश्मों की दुहाई दे-दे कर सदा से लूटा है। आम लोगों को भी यह

समझना चाहिए कि सभी चमत्कार कुदरत के नियम के अधीन है। परम तत्व या ईश्वर तो एक ही है। उसके अनेक रंग रूप कुदरत के नियम के मुताबिक ही काम करते हैं। जो सन्त या महात्मा चमत्कारों की सच्ची व्याख्या लोगों को नहीं बताते, वे उन्हें धोखे में रखते हैं। इस सच्चाई को आम लोगों से गुप्त रख कर बड़ा अन्याय हुआ है। इस सत्य को न बताने से ही संसार में पाखंड, अन्धविश्वास और मतमतान्तरों के भेदभाव बढ़ते चले जा रहे हैं। परम सत का सच्चा ज्ञान ही मनुष्य के दुःखों को दूर करके उसे मुक्ति की ओर ले जा सकता है। चमत्कारों के चक्कर में पड़ कर कोई भी मनुष्य जन्म मरण के बन्धन से छूट नहीं सकता।

प्रवचन

परम दयाल फकीर चन्द महाराज (सिकन्दराबाद, २७-१-६४)

कर्म का चक्र हर एक व्यक्ति को, राजा या प्रजा, पीर हो या पैगम्बर, संत हो या अवतार सबको खेल खिलाता रहता है। मैं भी धर्म के चक्र में आया हुआ हूँ। मेरा कर्म क्या है? छोटी उम्र में हिन्दू धर्म के संस्कारों से प्रभावित होकर उस मालिक से मिलने को तड़पा करता था। उसको कोई किसी विधि से पूजता है- कोई कैसे ही याद करता है। लाखों ही सम्प्रदाय हैं। स्वाभाविक रूप से उस मालिक से मिलने की तलाश के सिलसिले में मेरा कर्म या मौज मुझे दाता दयाल (महर्षि शिव) के चरणों में ले गई। वहाँ से यह नाम मिला, जो नाम आप लोग भी लेते हैं या जिस नाम के लिये लोग साधन करते हैं।

चूंकि धर्म, सम्प्रदाय और पंथों की पोथियों की बाणियों में भिन्नता थी, किसी धर्मावलम्बी ने कुछ कहा, किसी ने कुछ कहा;

इसलिए किसी बात पर निश्चय नहीं होता था। इस कारण सन् १९०५ ई० में मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर चलने के बाद जो समझ में आयेगा बता जाऊंगा। जो मेरी इच्छा थी वह मेरा कर्म बन गया। उसे भोगने को ही शायद दाता दलाल ने आज्ञा दी हो कि सत्संग कराया करना और धार्मिक शिक्षा में परिवर्तन कर जाना।

वर्तमान समय में प्रजातन्त्र राज्य (Democracy) है। हर आदमी अपनी अपनी लाइन की खोज (Research) करता है। अपने अनुभव को लेखबद्ध कर जाता है। वह उसकी थीसिस (Thesis) लिखता है। यह जो मेरा काम है अथवा सत्संग प्रवचन हैं यह मेरी रिसर्च की थीसिस (Thesis है।'

ऐसा समय आगया था कि जिस महापुरुष ने जो रिसर्च (खोज) की उसे लेख वद्ध किया। दूसरे लोगों ने उसे अन्धविश्वास से मान लिया। कोई अपनी खोज नही की। किसी ने और नई बात बताई तो दूसरे खिलाफ हो गये। धन्यबाद है कि हमारी हुकूमत मजहबी (सम्प्रदाय-वादी नहीं है। यदि किसी विशेष धर्म, सम्प्रदाय या मजहब के मानने वाली होती तो मेरे जैसे को फांसी दे दी जाती। जेजिस क्रायस्ट की क्या दशा हुई ? उन्होंने सिद्ध किया कि जमीन चौड़ी है। दूसरे ने कहा कि गोल है, जो जेसिस क्रायस्ट के कथन के विरुद्ध था। उससे कहा गया कि अपने शब्दों को वापिस लो। उसने फिर रिसर्च की। उसकी रिसर्च में फिर वही बात आई। उसे डराया कि अपने शब्द वापिस लो। तीसरी बार उसने फिर खोज की ओर कहा कि जमीन गोल है चाहे फांसी दे दो और उसे फाँसी दे दी गई।

मेरी रिसर्च (खोज) का परिणाम

मैंने रिसर्च की है और करता आ रहा हूँ। जिन्होंने मेरे साहित्य

को पढ़ा है अथवा मेरी विचार धारा को सुना है उसको वह बताता हूँ कि जो मेरी रिसर्च का परिणाम है। मेरी इस आत्मिक और मानसिक रिसर्च पर इस मजहबी दुनियाँ के लोग क्या सलूक करेंगे मैं नहीं कह सकता मगर मैं वही कह रहा हूँ जो कबीर कह गया अर्थात मेरी रिसर्च का परिणाम भी वही निकला जो कबीर ने कहा। उनका एक शब्द है:—

मेरी नजर में मोती आया है ।। टेक ।।
कोई कहे हलका कोई कहे भारी, दूनों भूल भुलाया है ।।
ब्रह्मा विष्णु महेसुर थाके, तिनहूँ खोज न पाया है ।।
संकर सेश और सारद हारे, पढ़ि रटि गुन बहु गाया है ।।
है तिल के तिल के तिल भीतर, बिरले साधू पाया है ।।
चहुं दल कंवल तिकुटी साजे, औंकार दर साया है ।।
ररंकार पद सेत सुन्न मध, षट दल कंवल बताया है ।।
पार ब्रह्मा महासुन्न मंझारा, सोइ नि: अच्छर रहाया है ।।
भंवर गुफा में सोहं राजै, मुरली अधिक बजाया है ।।
सन्त लोक सत्त पुरुष विराजै, अलख अगम दोऊ भाया है ।।
पुरुष अनामी सब पर स्वामी, ब्रह्माण्ड पार जो गाया है ।।
यह सब बातें देही माहीं, प्रति बिम्ब अंड जो पाया है ।।
प्रति बिंब पिंड ब्रह्मडं है नकली, असली पार बताया है ।।
कहै कबीर सत लोक सार है, यहं पुरुष निआरा पाया है ।।

ज्ञात नहीं कि कबीर का क्या भाव इस शब्द से या मोती से है। किस भाव और किस आधार पर उन्होंने यह शब्द लिखा है मैं नहीं जानता। मैं अपने अनुभव के आधार पर यह कहता हूँ कि मेरी नजर में एक मोती आया है।

सवाल होता है मोती क्या ? मोती चमकदार होता है बहुत कीमत का होता है उसके देखने से मनुष्य बड़ा प्रसन्न होता है। उसका मूल्य जान कर अपने को धनी समझता है। मोती सीप से पैदा होता है।

मेरी देह भी सीप है । तुम्हारी देह भी सीप है । खोजते खोजते यह अनुभव किया कि इस सीप में एक मोती होता है ।

कोई कहे हलका, कोई कहे भारी, दूनों को भूल भुलाया हैं । हलका भारी क्या है ? अपने अनुभव के आधार पर कहता हूँ कि उस परमात्मा से मिलने चले थे । कोइ उनकी प्राप्ति के लिये कठिन तपस्या करता है । कोई जप तप तीर्थ व्रत दान करता है । उसका भाव यह है कि यह भारी है । कोई कहता है यह करो वह करो । कई वेदान्ती अपने आप ब्रह्मास्मि कहते हैं । उन्होंने यह ख्याल ले लिया कि मैं ब्रह्म हूं ईश्वर हूं । वह मोती वेदान्यों को हल्का है दूसरों को जो योग जप तप आदि करते हैं उनको भारा है ।

मैंने कहा कि मेरा दावा नहीं कि जो कबीर का भाव है उसे मैं जानता हूँ । मैंने कठिन से कठिन तप किये । सचाई के रास्ते पर चला । ईमानदारी का जीवन बिताया । धोके से सदा बचने की कोशिश की । यह मेरी कठोर तपस्या है । इतना करने से मुझ में एक अहंकार आ गया मगर चित्त को शान्ति ? वह शान्ति जिसको पाकर परमात्मा या खुदा या राम की तलाश न रहे ।

मैं राम या परमात्मा को मिलने को चला था । उसके प्राप्त करने से क्या समझा ? उसके पाने के लिये मैंने घोर तप या अभ्यास किया । अन्दर में घंटा रारंग सारंग, बीन आदि शब्द सुने । सोचा मैदान मार लिया । दिल में अभिमान था । दाता दयाल (महर्षि) शिव के पास लाहौर गया । उन्होंने कहा देखूं तुमने क्या कमाई की है । मुझे देखा और बोले 'फकीर योगी हो गये । ऋद्धि सिद्धि आगई मगर असली फकीरी नहीं आई ।' उदास हो गया । कहा अच्छा कल तुम्हारा इम्तहान लेंगे । सोचता था कि यह पूछेंगे कि किस चक्र पर क्या देखा और क्या सुना । जब मैं वहाँ रहता तो सेवा करता था । झाड़ु और बुहारू लगाता । खाना भी बनाता । दस पांच सत्संगी आये हुये थे । मैं चौके में [illegible] । वहां आप आ गये । कहा साग मैं बनाऊंगा । चोके में बैठे और

एक मिनट में ५० हुक्म दे दिये। एक के बाद एक। नमक ला, हल्दी ला, जीरा ला, यह ला, वह ला, एक हुक्म को पूरा न कर पाता कि दूसरा तीसरा हुक्म दे जाते और पहिले वाले पूरे न हो पाते। मैं घबरा गया। घी में आग लग गई। खैर उसे ढक दिया और वह चले गये। मैं शाम को बैठा हुआ था। मैंने कहा महाराज मेरा इम्तहान नहीं लिया। उत्तर दिया कि इम्तहान ले लिया गया और तुम फेल हो गये। तुम साग बनाते समय घबरा गये। दुनियां में न घबराना ही फकीरी है। तुम लोगों में से बहुत से ऊंचे स्थानों पर अभ्यास करते है। मैं उनको अपने जीवन का संदेश सुनाता हूँ।

वही यही कि जीवन की किसी हालत में भी न घबराना वह मोती है। दुनियाँ के पोलीटिकल, सामाजिक, आध्यात्मिक जीवन में कभी घबराना नहीं चाहिये।

फिर मोती क्या है ? वह है हमारी वह अवस्था जहां किसी समय में घबराहट का नाम न आये। मेरी समझ में यह मोती आया है।

सन् १९५० में मैंने प्रण किया था कि राधास्वामी मत पर चलने से या गुरु भक्ति से या साधन अभ्यास से जो मिलेगा वह बता जाऊँगा। यह सत्संग कराना मेरा अहसान नहीं, किन्तु आपके कारण मुझे अपने कर्म के भोगने का अवसर मिला क्योंकि यह मेरा प्रण था या मैंने ऐसी इच्छा प्रकट की थी।

मोती कैसे प्राप्त हो

अब सवाल हैं कि यह न घबराहट पना कैसे आया।

ब्रह्मा विष्नु महेसुर थाके, तिनहूं खोज न पाया।
संकर सेस औ सारद हारे, पढ़ि रटि गुन बहु गाया।

कहने को तो कह दिया कि 'ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर थक गये, मगर क्या ख़बर किस भाव से ऐसा कहा है जो मैंने समझा वह कहता हुं। ब्रह्मा रचना करने वाली, विष्णु पालन करने वाली और महेश संहार करने वाली शक्ति है। शास्त्रों में कहा है कि ब्रह्मा इन्द्री में, विष्णु नाभि में और शिव कंठ में वास करते हैं। बाहर के ब्रह्मा आदि तो देखे नहीं हैं। हां बचपन में सुना हुआ था। साधन में विष्णु की मूर्ति सामने आ जाती थी तो उसे सत मानते थे। अब अनुभव ने सिद्ध किया कि यह मेरा अपना ख्याल (Imagination) था। आप लोगों की दया से उसका ज्ञान हो गया।

एक बार जब मैं राधास्वामी धाम से वापिस आ रहा था तो इलाहाबाद में एक सरुश हजारीसिंह मिला। वह कुछ फल लाया। पूछा तो कौन है। उसने कहा 'क्या आप नहीं जानते। मैंने आपसे दहली में नाम लिया था। आज सुबह दो बजे आपने जगाया। कहा कि मैं आ रहा हूँ। मिल सकते हो। उसने और आगे बताया कि आपको प्रकाश में पड़ा फूल पर देखता हूँ और आप भाषण देते रहते हैं।' इसी तरह किसी को राम दिखाई देता है, किसी को कबीर किसी को कोई किसी को कोई। अभिप्राय यह है कि वह ख्यालात हैं या वह संस्कार हैं जो आदमी के दिमाग पर पड़े हैं।

ऐ मानव ! तुझे शान्ति या न घबराहटपन कब आयेगा ? जब तुझे सच्ची समझ विवेक ज्ञान मिल जायेगा। जब तक यह नहीं आता तू घबराता फिरेगा।

इसी सच्ची समझ, विवेक या ज्ञान की प्राप्ति के लिए तुम गुरु से सच्चा प्रेम करो। वह क्या है ? सुनो ? तुमने मुझे गुरु माना। जिसका घनिष्ट प्रेम है वह आवेश में आकर घर से भाग कर मुझसे मिलने की कोशिश करेंगे। सम्भव है वह घर का ताला भी बन्द करना भूल जांय। यह प्रेम अवश्य है मगर यह स्थूल देह का प्रेम है। असली प्रेम है कि किसी पूर्ण पुरुष के सत्संग में बैठकर उसकी बात सुनो और गुनो।

राधास्वामी मत में गुरु भक्ति यह है :—

सत्संग करे बचन पुनि सुने । सुन सुन कर नित मत में गुने ।।
गुनि गुनि काढ़ि लेय तिसारा । काढ़ि सार तब करे अहारा ।।
करि अहार पुष्टि होय भाई । भव भौ भय सब गये नसाई ।।

शास्त्रों में श्रवण, मनन और निदिध्यासन बताया गया है ।। मुझे इस बात की इच्छा नहीं है कि मेरे सत्संग में हजारों की संख्या में लोग आवें किन्तु यह इच्छा है कि लोग इस अवस्था को प्राप्त कर जांय कि वह घबरायें नहीं । इसको कहते हैं अभय होना मगर जो घबरा जाय वह अभय नहीं हुआ । गुरु नानक ने भी इस मंजिल को निर्भय, निर्भौ, अडोल कहा है ।

वेदों और संतों का ध्येय एक है । इसके समझाने वाले नहीं और दुनियाँ समझने की जरूरत महसूस नहीं करती । इसलिये यह रहस्य गुप्त था । गुप्त का गुप्त रह गया । पंथ चलाने वालों ने गलत मान प्रतिष्ठा के लिए असलियत को प्रकट नहीं किया और दुनिया ध्येय को प्राप्त न कर सकी ।

इसलिये सच्चे पुरुषों के सत्संग की आवश्यकता है । उसके बिना विवेक नहीं होता ।

तुलसीदास का कथन है :—

बिन सत्संग विवेक न होई ।
राम कृपा बिना सुलभ न सोई ।।

सत्पुरुष के सत्संग से समझ आती है, ज्ञान होता है, इसलिये संत मत में सत्संग की महिमा है ।

मैं आपको अपने अनुभव के आधार पर सच्चा ज्ञान दे रहा हूं । देखो ! ब्रह्मा, विष्णु, महेश यह मन की तीन शक्तियाँ हैं जो सृष्टि की रचना करती, पालन करती और नाश करती हैं ।

जब तक मनुष्य उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय के बन्धन में फंसा है उसको शान्ति नहीं मिल सकती। तुम्हारी वृति हर समय किसी न किसी बात में फंसी रहती है। तुम किसी न किसी वस्तु को बनाते, काम में लाते और तोड़ते रहते हो। तुम्हारे मन में संतान पैदा करने की इच्छा रहती है। संतान पैदा करते हो। क्या तुम सुखी हो? संतान वालों को पूछो कि संतान हो जाने से तुमको कोई कष्ट तो नहीं है? सुख ही सुख है या नहीं?

विष्णु का वास नाभि में है। उनका काम पालन करना है। क्या इसमें हमेशा सुख है? इसी प्रकार बिगाड़ने या नाश करने में भी सुख नहीं। इसलिये जब तक इनमें लगे हो वासना पैदा करते हो। उस शक्ति को जिसका वर्णन पहिले किया है प्राप्त नहीं कर सकते। इसलिये कबीर ने जो कहा है कि ब्रह्मा विष्णु महेश थक गये, ठीक कहा है। जब तक सुरत इन तीनों बातों में यानी बनाने, काम लेने और बिगाड़ने में फंसी है तम शांति प्राप्त नहीं कर सकते।

देखो! उसके लिये भजन कीर्तन करते हैं। मंत्र उच्चारण करते हैं। उन्हें उस समय आनन्द मिलता है मगर क्या वह घबराते नहीं? क्या उनकी वृति में विक्षेप नहीं आता? वे अपनी अपनी रहनी को देखें। क्या इनमें घबराहट नहीं आता? मैं अपनी कहता हूँ कि यदि नहीं आता तो धन्य है। मैं बारह वर्ष साधन अभ्यास करता रहा। गुरु की आर्त्तियाँ करता था। घुंघरू बाँधकर नाचता था। इतने पर भी जब गुरु ने इम्तहान लिया तो फेल हो गया। यह मेरे जीवन का अनुभव है।

संतों का मार्ग अभय पद प्राप्त करने का है। शिक्षा वही है। बात एक ही है मगर समय समय पर इसमें परिवर्तन होता रहता है गुरु हमेशा चोला बदलता है। दुनियाँ यह समझती है कि एक

गलत है। गुरु नाम है ज्ञान का। गुरु का चोला बदलना यह है कि समयानुसार वह शिक्षा की वर्णन शैली बदल जाता है। पहिली शिक्षा के लिये नये शब्द प्रयोग करता है। इसलिए मैं खंडन नहीं करता किन्तु सार बात या सचाई को बयान कर देता हूं।

दुनियाँ में एक ही कोटि के लोग नहीं हैं। विभिन्न श्रेणियों के हैं। बहुत से यथार्थ बात पसंद नहीं करते किन्तु रोचक बातों को पसंद करते हैं मगर आज के समय में अधिकतर लोग यथार्थ और तत्व बात (To the point) चाहते हैं। मैं भी माँग और पूर्ति (Demand and supply) के नियम के अनुसार वैसा ही कहता हूं। जो समझें समझ जायें वर्ना कुछ दिन टक्कर खाने के बाद सही मार्ग पर आयेंगे।

'है तिल के तिल भीतर, बिरले साधू पाया है।'

यदि लोग सारे जीवन तिल में लगकर तिल में ही दाखिल होने की कोशिश करते रहें तो यह वस्तु नहीं मिल सकती जब तक पूर्ण पुरुष का सत्संग न मिले। बिना सत्संग के जितना अधिक अभ्यास करोगे उतने ही अधिक भ्रम उत्पन्न होंगे। तुम कहोगे कि मैं उल्टी बात कर रहा हूं क्योंकि मेरी समझ में यह आगया है कि वह मोती क्या है और अब घबराता नहीं हूँ।

इस बात के प्रगट करने के लिये राधास्वामी दयाल, संत कबीर तथा दूसरे संत प्रकट हुए। उन्होंने कहा कि तमाम दुनियां काल माया के चक्र में फंसी है। यदि जितने रूप अन्तर में प्रकट होते हैं यह तुम्हारी ही वासना के हैं। यह स्थूल होकर छाया रूप हो जाते हैं और दिखाई देने लगते हैं। हिन्दू शास्त्र इनको छाया पुरुष कहते हैं।

इस विषय पर एक दो घटनायें सुनाये देता हूं ताकि बात समझ में आ जाय। मैं एक जगह गया। वह नाम नहीं कहना चाहता। वहाँ एक स्त्री दाता दयाल (महर्षि शिव) का ध्यान करती थी। उसने बताया कि उसमें प्रकाश पैदा होता है। दाता दयाल की मूर्ति प्रगट होती है। इतना प्रकाश होने पर गुरु मूर्त्ति प्रकट हुई और साथ ही एक

मूर्त्ति और प्रगट हुई जो काम चेष्ठा रखती थी। यह बात क्या है ? सुनो। ये जितने दृश्य तुम्हारे अन्दर प्रगट होते हैं यह कुछ नहीं हैं। ये हैं संस्कारों का प्रभाव, जो जन्म जन्मान्तरों से तुम्हारे चित्त पर पड़े हैं। अभ्यास के समय में, स्वप्न में और अन्त समय में भी यदि ख्याल तथा संस्कार अच्छे पड़े हुए हैं तो अच्छे दृश्य दिखाई देंगे और यदि बुरे हैं तो बुरे दृश्य आवेंगे। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार आदि के जैसे जैसे भाव विचार रहे हैं वही भाव विचार विभिन्न रूप बनाकर सामने आयेंगे। यदि प्रेम और भक्ति के भाव विचार रहे हैं तो वे गुरु का या इष्ट का रूप प्रगट करेंगे। चूंकि उस स्त्री में काम चेष्ठा थी, इसलिए वह ख्याल मूर्तिरूप में प्रगट हो गया। स्वप्न में भी काम भोग करते हो। जो कुछ यहां है वही अन्तर है इसलिए सबसे पहिले मन के विचारों को शुद्ध करने की कोशिश करो।

दूसरी घटना सुनो। एक स्त्री ३०-४० वर्ष की है। व्यास की सत्संगी है। बाबा साहब सिंह (व्यास वाले) उसे शादी करने को कहते मगर उसने शादी नहीं कराई। इसके बाद बाबा जगतसिंह जी आये और उन्होंने भी शादी को कहा मगर उम्र अधिक हो चुकी थी। हर बात का समय होता है। रुपया कमाने का, शादी का, संतान उत्पन्न करने तथा भजन का समय होता है। मैं इस रहस्य को जानता हूं। अब उसकी शादी नहीं हो सकती थी क्योंकि उम्र अधिक हो गई थी। एक दिन मुझसे आकर कहती है कि स्वप्न में बाबा सावनसिंह व बाबा जगतसिंह आये। कहा—"काको ! (उसका नाम था) हम तेरे लिए पति कहां से लायें ! फिर आप भी आ गए। तो उन्होंने फिर आपसे शादी करदी।" दुनियां के लोग भ्रम और अज्ञान में फंसे हैं। उनके भ्रम और अज्ञान को मिटाने को आया हूं। मेरा नाम है परम दयाल। यह पद मुझे गुरु से मिला हुआ है। जितने सत्संगी हैं सबके सब अपने

मनानन्द, काल और माया के चक्र में फंसे हैं। मेरी बजाय कोई और होता तो उस स्त्री के अज्ञान का बेजा फायदा उठाता।

एक और उदाहरण सुनो—सूरतसिंह एक सत्संगी है। मुझ से नाम ले गया। नाम ले जाना और बात समझना और है। इसलिये सत्संग पर जोर देता हूँ। यदि सार ज्ञान रुपया देने से मिल जाता तो बिरला जैसे सेठ रुपया देकर संसार के चक्र से निकल जाते। यह दिल देने का विषय है। सुरत देने का काम है। गुरु देह का नाम नहीं है। गुरु है वाणी, बचन। बचनों के अनुसार न चलने से सुरत न लगाने से मन के चक्र में भटकते रहते हैं। हां, तो जब राधास्वामी धाम में दाता दयाल (महर्षि शिव) की समाधि बन रही थी, सूरतसिंह के अंदर मैं मेरा रूप प्रगट हुआ और कहा कि राधास्वामी धाम में ५००) रु० भेज दो। उसने मुझे लिखा कि आपने स्वप्न में मुझे ५००) रु० समाधि के लिए भेजने को कहा है वह मैंने भेज दिये हैं।, मगर उसके अन्दर में रुपया भेजने को कहने का मुझे कोई इल्म नहीं था। कुछ दिनों बाद उसने कोई कुकर्म कर डाला जिसका बुरा प्रभाव पड़ा। उसने मुझे लिखा कि आपने अंतर प्रकट होकर ५००) रु० तो भिजवा दिये मगर जब बुरा काम मुझ से हुआ तो आप प्रगट नहीं हुये और मुझे उससे रोका नहीं। पागल हो गया। २००)–२४०) रु० की तनख्वाह थी। इसी प्रकार अन्य पथ वाले या गुरुमक्त इस मन के चक्र में आये हुये हैं। इस मन से बनाई हुई मूर्ति के प्रकट होने को ही सब कुछ समझ कर इससे निकल नहीं पाते। पंथ वाले पंथ के बंधनों में बधे हुये हैं। डेरे धाम या मठ वाले उनसे नहीं निकल पा रहे। मैं यह काम इसलिये करता हूँ कि लोगों को असलियत का ज्ञान हो जाय। यह जो मैं कह रहा हूं वही राधास्वामी दयाल की बाणी है।

यह अवस्था क्यों नहीं आती ? इसलिये कि तूमको गुरु ज्ञान नही मिला। सतसंग प्राप्त नहीं हुआ। गुरु तत्व का अभाव हो गया।

होती है तब तब मैं प्रगट होता रहता हूँ।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानि र्भवति भारत ।।
अभ्यु त्थानम धर्मस्य तदाऽऽत्मामं सृजाम्यहम् ।

इसी प्रकार जब मानसिक अज्ञान ससार में फैलाता है तो वह महान शक्ति संत रूप में आहार प्रगट होती है। इस समय सत सतगुरु वक्त फकीर के दिमाग में बैठकर यह भाषण दे रहा है। दुनियाँ चाहे जो कहे, अहंकारी कहे, बुरा करे, मैं जिस काम को आया हूँ वह बिना किये वापिस नहीं जाऊंगा। मेरा काम क्या है:—

तू तो आया नर देही में, धर फकीर का भेषा।
दुखी जीव को अंग लगाकर ले जा गुरु के देसा ।।
तीन ताप से जीव दुखी है, निबल अबल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी ।।

सतसंग में जो मेरे शब्द हैं वही नाम दान है। मैं मकान बन्द मंत्र नहीं देता। सत्संग में जो मेरी बात समझले और समझ कर अलल में ले आवे उसका बेड़ा पार है : उसके प्रमाण में राधास्वामी दयाल की बाणी हैं :—

गुरु ने दीना भेद अगम का
सुरत चली तज देश भरम का ।।
बल पाया अब विरह मरम का।
भटकन छूटा फेरो मरम का ।।

मैं सत्संग में उस ख्याल को देता हूँ जो संतो का असली ध्येय है।

है तिलके तिलके तिल के भीतर, विरले साधे पाया है।

वह तिल के अन्दर बन्द है मगर दुनियाँ को तिल में दिखाई देता है। तुम समझते हो कि अंदर में बाबा फकीर बोला है और तुम उसको सत मानकर सन्तुष्ट हो रहते हो। इस समझने में गलती है। मैं इस राज (रहस्य) को प्रकट कर रहा हूँ। जो मेरे बचनों की मार धाड़ सह गया उसका बेड़ा पार है। कोई कोई साधु होता है जो इस रहस्य का ज्ञाता होता है।

हितोपदेश

ईश्वर ने कुटुम्ब रचा। जीव जन्तु बन गये। मनुष्य कुल उत्पन्न हुआ और सब रहने सहने लगे। ईश्वर देखने आया। वह लड़ रहे थे। मिल जुल कर रहने की शिक्षा देकर चला गया।

यह मिलने को तो मिले परन्तु लड़ाई बन्द नहीं हुई।

ईश्वर फिर आया। इनकी दशा देखकर प्रसन्न नहीं हुआ। बोला 'मिलजुल कर रहो।'

एक बोला 'इसे निकाल दो शान्ति आजाये।' ईश्वर ने कहा 'किसे निकालूँ! किसे रक्खूं। कुटुम्ब है।' कोई न समझ सका वह लौट गया।

फिर आया और वही दृश्य आखों में आया। फिर वही उलहना और निकालने की प्रार्थना!

ईश्वर बोला 'कहाँ निकालूं? यह कहाँ रहे? कुटुम्ब से बाहर कुटुम्ब तो नहीं रह सकता।'

फिर भी समझ नहीं आई और वह चला गया।

कुछ दिनों पीछे फिर आया और वही लड़ाई झगड़ा! और वही बात!

ईश्वर बोला 'निकालने निर्बलता और साथ रहने में बल रहता है।

किसी ने नहीं समझा और वह चला गया।

फिर आया। इस बार बहुत से मनुष्यों ने मिलकर उस एक की निन्दा की।। ईश्वर बोला 'तुम को समझ नहीं है। सब बुन्द मिलकर समुद्र होते हैं। एक के निकल जाने से समुद्र समुद्र न रहेगा।' यह कहकर वह फिर चला गया। किसी ने भी बात न समझी।

जब आया फिर वही ऊधम! तब उसने सब को मिलाकर कहा सत्संग करो। सत जीवन है, और चला गया, किसी ने फिर नहीं समझा।

जब आया फिर वही ऊधम ! तब उसने सबको मिलाकर कहा 'सत्संग करो । सत् जीवन है," और चला गया, किसी ने फिर नहीं समझाया ।

सातवीं बार आकर वही उत्पात देखा और निकालने की प्रार्थना सुनी । बोला "शब्द का साधन करो, मेरा रूप देखो, मेरा नाम लो ।"

सब घबराये हुये थे । बात मानी । उसकी सुनी । ईश्वर का रूप देखा और जिसकी निन्दा वह करते थे उसे ईश्वर में गुथा हुआ पाया । सोचा "यह तो उसी में है । उसी का है । उसी से है । उसके निकाल जायेगा और हानि पहुँचेगी ।" तब उनके हृदय में प्रेम उत्पन्न हुआ । एक दूसरे को प्यार करने लगे और सहज में शान्ति आ गई । अब ईश्वर का कुटुम्ब सुख और आनन्द से रहने लगा निन्दा और आपस की खटपट जाती रही ।

शब्द

१. प्रेम औषध, ईर्षा और, द्वेष, मन के रोग हैं ।
रोग जब हों दुख बिपत, आपत कलेश और सोग हैं ।।१।।

२. सब हैं उसके वह है सबका उससे न्यारा कौन है !
भूल में कैसे पड़े ! भरमे हुये सब लोग हैं ।।२।।

३. फूट का फल दुख है दुख, में सत्त का जीवन नहीं ।
संग सत् का फल चखो, उस ही में सुख के भोग हैं ।।३।।

४. राधास्वामी ने दिखाया, प्रेम का रास्ता हमें ।
प्रेम में सुख शान्ती, आनन्द के संयोग हैं ।।४।।

———

दूसरी कथा

जगत् वाटिका

ईश्वर ने जगत् को वाटिका बनाया। नाना प्रकार के फूल बूटे और पौधे लगाये। घास पात कांटे कटीले उगाये। वाटिका रमणीक ! देखने में मनोरंजक और मनोहर ! उसमें जहाँ देखो सुन्दरताई का दृश्य आँखों को आकर्षित करता था। उसमें सब कुछ था। वाटिका सुन्दर ! शोभा धाम ! और सब विधि से पूर्ण थी। कोई उसे देखकर यह नहीं कह सकता था कि इसमें यह है और यह नहीं है। बहुभाँति के पक्षी पखेरू वृक्षों की शाखाओं पर कुलेल किया करते थे। फूलों पर मक्खी और भँवरे मँडलाते रहते थे। जीव जन्तुओं ने उसे सुखदायक समझ कर उससे जी लगाया। उसमें पाँच प्रकार के पदार्थ शरीरधारी होकर अपनी अपनी शोभा दिखाते रहते थे। यह शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध थे।

ईश्वर ने मनुष्य से कहा, "जा ! इस वाटिका को देख। और उसको देखकर जीवन, बुद्ध और सुख का भोग प्राप्त कर।" मनुष्य आया। कुछ दिनों तक तो वह उसका सुख भोगता रहा। फिर संयोग वश वह उसके दोष निकालने लगा और आप ही आप दुखी हो गया।

ईश्वर ने मनुष्य की दशा देखी। पूछा "इस सुख की वाटिका में आकर तू दुखी क्यों हो गया ? यहाँ तू दुख भोगने के लिये तो नहीं आया था ! तुझे हो क्या गया ?"

मनुष्य बोला तेरी वाटिका बहुत अच्छी है परन्तु तू ने समझ बूझकर काम नहीं किया। मुझ से सम्मति ली होती तो मैं सुमति देकर इसे और भी अच्छा बनवाता।"

ईश्वर हँसा "अब क्या हुआ है ? यदि तू इसे और अच्छा बना सकता है तो अब काम में लग जा। मैं तुझे आज्ञा देता हूं। परन्तु यह तो बता दे कि इसमें त्रुटि क्या है ?"

मनुष्य ने कहा "वाटिका में फूल ही फूल होने चाहिये। काँटे का नाम न रहना चाहिये।"

ईश्वर मुस्कराया "अच्छा ! कांटों को काटकर निकाल दे !"

मनुष्य ने ऐसा ही किया। कुछ दिनों तक तो वह फूल की शोभा देख देख कर मन में फूला न समाया। फिर उससे जी भर गया। घबराया, उकताया और दुखी हुआ।

ईश्वर आया। उसकी दशा देखी और पूछा "क्या है ?"

यह बोला "वाटिका बिगड़ गई।"

ईश्वर ने कहा 'फूल की शोभा काँटों ही से थी। तूने काँटे काट डाले। अब एक ही पदार्थ के रहने से तेरे विचार बुद्धि में बिलकता आगई। वाटिका की शोभा यही है कि उसमें सब कुछ हो तब तो वह पूर्ण है नहीं तो अधूरी और अपूर्ण ! यह वाटिका तो नहीं रही। अब फुलवारी रह गई।'

मनुष्य ने कहा 'फूल इतने लाभदायक नहीं होते। केवल सुगन्ध देते हैं। मैं फूल के वृक्ष लगाना चाहता हूँ।'

ईश्वर हँसा 'फिर तुझे रोकता कौन है ! वह भी कर देख !'

मनुष्य ने वैसा ही किया। फल खाये। घूमा फिरा। जिन वृक्षों में फल नहीं लगते थे सब काट गिराये। अन्त में उससे भी उकता गया और दुखी हुआ।

ईश्वर फिर आया। पूछा 'अब तो तू सुखी है ?'

यह बोला 'नहीं ?'

ईश्वर ने प्रश्न किया 'क्यों ?'

ईश्वर ने कहा 'तू ने भूल की। यह वाटिका नहीं रही। फुलवारी हो गई। फुलवारी भी नहीं ! पतवारी भी नहीं ! कटवारी भी नहीं ! अधूरी वस्तु सुखदायी नहीं होती।'

यह कहकर ईश्वर चला गया।

मनुष्य ने काट छांट से बहुत काम लिया परन्तु उसे सुख नहीं प्राप्त हुआ। तब महा दुखी और व्याकुल हुआ।

ईश्वर ने आकर उसकी दशा देखी। पूछा 'क्यों! अब तो तू सुखी है?'

इसने उतर दिया 'मैं भ्रत में पड़ गया। जो कुछ तू ने किया था वही ठीक था।'

ईश्वर ने प्रसन्न हो कर कहा 'मुझे देख।'

उसने उसे देखा। ईश्वर वाटिका स्वरूप प्रतीत हुआ और इसमें सब कुछ था। चकित हुआ। फिर ईश्वर ने कहा 'अपने को देख।' उसने दृष्टि फेर कर अपने अन्दर में देखा। वह भी आप वाटिका के रूप का निकला। तब तो वह और भी चकित हुआ ईश्वर बोला 'यह वाटिका तेरा ही रूप अथवा तेरे रूप की छाया है। इसका तिरस्कार न कर। न इसके किसी पदाथ से घृणा कर। जैसा है वैसा रह और तू सुखी रहेगा। यदि वहां एक की आवश्यकता है तो सब की आवश्यकता है।'

तब मनुष्य को पूर्ण सुख प्राप्त हुआ।

शब्द

१. प्यार कर सब से, भरम की, द्वेष दृष्टी त्याग कर।
रूप है यह जगत तेरा, इसी से अनुराग कर। १।

२. तू यहाँ है तू वहाँ है, लोक में, परलोक में।
किस जगह जायगा, इस रचना को कह दे भाग कर। २।

३. 'नेति' क्यों कहता है? 'एती' भाव को चित् दे सदा।
'नेति' है वैराग 'एती' भाव से अनुराग कर। ३।

४. 'नेति' 'एती' दोनों कल्पित, इनका तो उत्थान है।
त्यागना हो त्याग दोनों, नींद भ्रम से जाग कर। ४।

५. राधास्वामी संत सतगुरु, के बचन सुन प्रेम से।
पद कमल में सर झुका, भक्ती अटल वर माँग। ५।

तीसरी कथा

मनुष्य और उसकी छाया

ईश्वर ने मनुष्य को बताया। देखा कि वह जकेला है, सोचा 'क्या करूँ ! मनुष्य सूर्य के प्रकाश में घूम फिर रहा था। उसके शरीर की छाया पांव से लगी हुई नाच रही थी कभी छोटी हो गई कभी बड़ी ! कभी दायें गई कभी बायें ! कभी इतनी घटी कि मनुष्य के पंजे से छोटी बन गई ! और कभी इतनी बढ़ी कि मनुष्य उसके सामने बच्चा प्रतीत होने लगा। जब वह छाया को पकड़ने जाता छाया फुदकती हुई आगे की ओर लम्बे डगभर कर भाग निकलती और जब यह उससे पीठ फेर कर भागता तो यह उसके पीछे दौड़ने लगती।

ईश्वर दृश्य देखकर हंसा। बात समझ में आगई। बोला 'क्या तू चाहता है कि मैं तेरे लिये इसे पकड़ूं ?' उस ने कहा 'हां ! मैं अकेला हूं। यदि यह साथ रहे और बोले तो मुझे सुख मिलेगा। यह सामिग्री इकट्ठा करेगी। उसकी संभाल रक्खेगी और मैं अचिन्त रहूँगा।'

ईश्वर ने कहा 'समझ बूझ कर बात कहो। यह तुझ से लपटेगी वह बोला 'मैं इसे लिपटा रक्खूँगा।'

ईश्वर मुसकराया 'यह तुझे हँसायेगी।' यह बोला 'मैं हँस लूँगा। रोलूँगा।'

ईश्वर ने कहा 'यह चंचल होगी। तुझे भी चंचल बनायेगी 'वह बोला मैं चंचल होलूँगा।'

ईश्वर ने हँस कर उसे हाथ लगाया और वह स्त्री के रूप की होगई। ईश्वर ने उसे पकड़ कर मनुष्य को दिया और आप अन्तर्ध्यान

होगया ।

स्त्री को पाकर मनुष्य मन में बड़ा प्रसन्न हुआ । साथ लाया, घर बनाया और रहने लगा परन्तु थोड़े दिनों पीछे वह उससे घबरा गया । ईश्वर को स्मरण किया । ईश्वर ने प्रगट होकर पूछा 'अब क्या चाहता है ?' उसने उत्तर दिया 'यह बड़ी बातूनी है । रात दिन बकबक करती रहती है । मैं इसके बकवास से उकता गया, इसे फिर छाया बना दे ।' ईश्वर ने हाथ लगाया । वह फिर छाया हो गई । यह प्रसन्न होकर आया । घर में उदासी छायी हुई थी । घबराया और दुखी हुआ । एक से दो अच्छे थे । बात चीत तो कम से कम होती थी ।

ईश्वर का ध्यान किया । वह प्रगट होकर कहने लगा 'अब क्या है ?' यह बोला 'छाया को पकड़ दे । उसके बिना सुख नहीं ।' उसने पकड़ दिया । अब यह दोनों फिर साथ साथ रहने लगे ।

कुछ दिनों पीछे स्त्री के गर्भ से कई पुत्र पुत्री उत्पन्न हुये । इनके पालन पोषण के लिये पुरुष को उद्यम करना पड़ा । दुःख और कष्ट सहना पड़ा । फिर ईश्वर को बुलाकर कहा 'यह तो महा दुखदायी हुई ले जा ! मैं इसे नहीं चाहता ।'

ईश्वर को अब की बार क्रोध आया 'मूर्ख ! मैंने पहले ही तुझे बता दिया था । यह बढ़ेगी, घटेगी, दौड़ेगी, रूकेगी और तेरे पीछे पड़ेगी । अब मैं तेरी न सुनूँगा । मुझे और भी काम काज करने हैं । वह करूँ या कि स्त्री और पुरुष के नित्य के झगड़ों को सुना करूँ । दूर हो ! जा, जो तेरी समझ में आवे कर । मैं अब कुछ न सुनूँगा ।' गले पड़ा ढोल बजाये सिद्ध ।'

तब से वह निराश हो गया । कुछ दिनों तो जिया । फिर बुढ़ापा आया रोगी हुआ और रोते हुये चल बसा ।

ईश्वर हँसा 'मूर्ख को छाया के वश रखने की भी बुद्धि नहीं थी । मैं क्या करूँ ! मेरा कोई दोष नहीं था । उसने जैसा किया वैसा

पाया ! और ईश्वर चुप हो रहा ।

शब्द

१. प्रेम छाया से किया, छाया का गुण जाना नहीं ।
तू ने अपना और उसका, रूप पहिचाना नहीं ॥ १ ॥
२. ब्रह्म में माया है शक्ती, शक्ति दुखदायी नहीं ।
भरम से बलवान ने, बल पाके बल माना नहीं । २ ।
३. माया छाया एकसी, दौड़ो तो दौड़े और चले ।
रुकने से रुकती है, इससे भय कभी खाना नहीं ।३ ।
४ जान लो पहँचान लो, और अपनी शक्ती मानलो ।
मानकर पहिचान कर, भ्रान्ति चित् लाना नहीं । ४ ।
५. राधास्वामी पंग कर, कुछ दिन कि तुझको ज्ञान हो ।
ज्ञान पाकर भूल के चक्कर, में फिर आना नहीं । ५ ।

चौथी कथा

रचना की सम्मिलित अवस्था

ईश्वर की दया से मनुष्य ने अपनी आँख खोली । ईश्वर की रचना की वाटिका देखी । प्रसन्न हुआ । वाह ! वाह क्या कहना है । कमल का फूल खिला है । भँवरे मँढला रहे हैं मक्खियां भिन भिना रही हैं । कोयल चहक रही है । चकोर घूम रहे हैं कबूतर गुटुर गूँ, कर रहे हैं । वाटिका से निकल कर चीते, हाथी, गेंडे, हिरन, बारह सिंहे, मोर, बकरी, गाय भैंस सब कुछ देखे । बहुत सुखी हुआ ।

इस सुख की दशा में उसे ईश्वर मिला । पूछा 'कैसे है । यह बोला 'आनन्द ही आनन्द है । तू बड़ा कारीगर है । कैसी अच्छी रचना की है

वाह री तेरी चतुराई ! धन्य है तेरी प्रभुताई ! तेरी महिमा का गीत कौन गा सकता है !'

ईश्वर प्रसन्न होकर बोला 'जो तू कहे तो मैं इस विचित्र रचना की सम्मिलित अवस्था को पकड़ कर तेरे साथ कर दूँ। यह बोला 'भलाई और पूछ पूछ ! इससे बढ़कर और क्या हो सकता है !'

ईश्वर ने हाथ बढ़ाया। सारी रचना को अपनी मुट्ठी में किया। कमल की सुन्दरताई, चकोर की चाल, मक्खी की भिनभिनाहट, कबूतर का गला, चीते की कटि (कमर), हाथी की गम्भीरता, बारहसिंहा की सुन्दरताई का घमण्ड, मोर की स्वप्रशंसा, हिरन की आँख, गेंडे का पड़-पन, बकरी की मैं, मैं, कोयल की तू, तू' गाय की सहन शक्ति, चन्द्र की स्वरूपता, सूर्य की चमक ली और सब को मिला जुलाकर स्त्री के रूप में बनाकर खड़ी कर दी। मनुष्य से कहा ! 'ले जा ! यह तेरे साथ रहेगी।'

उस ने धन्यवाद देकर उसे अंगीकार किया। घर बनाया और उसके साथ रहने लगा ! भोग विलास किया।

स्त्री तो स्त्री है। जैसा उसका स्वभाव वैसे उसके काम ! कभी मक्खी की तरह भिनभिनाती। कभी कोयल जैसी 'तू तू' और बकरी जैसी मैं मैं' करती। चीते जैसी कमर लचकाती। हिरन जैसी आँख दिखाती। मनुष्य उसकी चाल ढाल देखा करता। मुंह को बन्द रखता। आँख और कान फेर लेता।

स्त्री ने मन में विचारा—'यह अच्छा पुरुष मिला। मेरा मन्त्र इस पर नहीं चलता और न यह दाव में आता है।' सब कुछ कर बैठी। उस की कुछ न चली।

तब एक दिन निराश होकर अपने पति से कहा 'मैं तेरी अर्द्धांगिनी हूँ तू क्यों इस प्रकार रहता है ?'

मनुष्य हँसा 'सुन सुन्दरी ! मैं तेरा पति हूँ। तू मेरी स्त्री है। मैं रूप और तू छाया है। तू मेरे प्रेम की भूखी है। मुझ से प्रेम लो।

तुझे प्यार करता हूँ। बस इतना ही बहुत है। उस से अधिक तू क्या चाहती है ?

यह बोली 'तू मेरी सुन बात अनसुनी क्यों कर देता है ? तू देखता हुआ अनदेखता बना रहता है बोलता हुआ अन बोला रहता है। यह बात मेरी समझ में नहीं आती।'

मनुष्य ने कहा 'तू इसे जानकर क्या करेगी ? अपना काम कर और जैसी है वैसा व्यवहार किया कर। मैं तेरे रूप को जानता हूं और अपना रूप भी पहिचानता हूँ। चल घर का काम काज कर। बाल बच्चों की रक्षा और सँभाल कर। जितना घर बार बढ़ाते बने बढ़ा। मैं तेरे साथ हूँ और साथ कभी न छोड़ूँगा तेरा मेरा साथ ईश्वर ने किया है !'

स्त्री ने चकित होकर पूछा 'मेरा रूप क्या है ? और तेरा रूप क्या है ?'

यह हँसा 'प्यारी ! इसको जानकर क्या करेगी ! द्रौपदी का चीर ढका रहे तब ही अच्छा है। क्या मैं दुश्शासन हूँ ?'

वह बोली 'दुश्शासन द्रौपदी का चीर नहीं खींच सका परन्तु द्रौपदी तो अर्जुन के सामने नंगी रहती थी। वह उसका पति था।'

इसने थोड़ी देर सोचा 'सच है परन्तु अर्जुन ने दौपदी का चीर कभी नहीं उतारा। काम से काम रक्खा। क्या तू इसे नहीं जानती ?'

यह हँसी 'ठीक है परन्तु मैं स्त्री हूँ। तू तिरियाहट को जानता है। अपने और तेरे रूप समझे बिना मैं चैन न लेने दूँगी।'

पुरुष अपनी बारी पर हँसा 'मैं तुझे तेरा रूप न बताऊँ तो तू क्या करेगी ?'

स्त्री बोली 'जान दे दूँगी'

यह और भी हँसा 'तुझ में जान कहां है जो जान दे देगी ! जान तो मुझमें है। तू मेरी जान से जीती, मेरे बल से बलवन्ती, मेरे धन से धनवन्ती और मेरी बुद्धि से बुद्धिवती है। तेरा तुझ में क्या है ?

कुछ भी नहीं ! तूने मुझसे संयोग किया । मेरे रूप को अपने गर्भ में ढाल कर पुत्र बनाया । तेरा तो यहां कुछ भी नहीं । सोच तो सही ! तू कैसे जान देगी ।'

वह घबराई 'तुझे बातें बहुत आती हैं । अच्छा यह सब सही । मेरा रूप मुझे समझा दो फिर मैं चुप रहूँगी ।'

यह बोला 'सुन ले ! तू जीव जन्तु सबकी छाया लेकर बनाई गई है । तेरी भिनभिनाहट मक्खी की है । मक्खी के भिनभिनाने से मुझे क्या ! तेरी 'मैं मैं' बकरी के बोल की छाया है । जितना जी में आवे मैं मैं' किया कर । मुझे क्या ! तेरी चतुराई लोमड़ी के धोके की छाया है । तेरी अपनी प्रशंसा करना मोर की सुन्दरताई की छाया है.....।'

वह इतना ही कहने पाया था कि स्त्री की दशा बिगड़ गई बोली 'बस बस ! अब अधिक बात न कर ।'

इसने कहा 'तेरा चंचलपन। बादल की छाया है । तेरी आँख हिरन की आँख की छाया से बनी है.....।'

स्त्री ने कहा 'बस बस ! अब मुँह बन्द करले । मैं अब सुनना नहीं चाहती ।'

यह बोला 'अपना रूप आज समझ ले कि तू क्या है ! फिर तुझे पूछने की आवश्यकता न रहे ।'

इस से लज्जित होकर सर झुका लिया मन ही मन कहने लगी कि 'इस पुरुष ने तो मेरा पता पा लिया । अब चुप रहने ही में भलाई है ।' फिर पाँव पर गिरकर उससे क्षमा मांगी और बुरे भले सब दशाओं में उसका मुँह देखकर तब उसके साथ रहने लगी और उनके बीच फिर अनबन नहीं हुई । वह उसे प्यार करता परन्तु वह पुरुष का प्यार था अनाड़ी का नहीं । फिर तो वह भी आज्ञाकारी हो गई और यह आज्ञा पालना नारी का था । नर नारी दोनों प्रसन्न चित्त सुख भोगने और मंगल जीवन जीने लगे ।

शब्द

१. ब्रह्म में माया है यह, उस से अलग होती नहीं।
चाँद और सूरज से न्यारी, दोनों की जोती नहीं। १।
२. जागता है ब्रह्म तब, माया है उसकी जागती।
भिन्न होकर ब्रह्म से, माया कभी सोती नहीं। २।
३. बल सदा बलवान में, और शक्ति शक्तीवान में।
शिव से शक्ती न्यारी होकर, हँसती और रोती नहीं। ३।
४. सत् में जो सत्ता है वह, सत्ता नहीं सत् से पृथक।
सत् की सत्ता साथ है, और साथ से खोती नही। ४।
५. राधास्वामी संग में, आई समझ अब रूप की।
भिन्न सागर से कभी, मूँगा नहीं मोती नही। ५।

——

ज्ञान के तीन रूप और अभनुव

सत्संग परम पुरुष, पूर्ण धनी हजूर मानव दयाल जी महाराज
होशियारपुर १६-३-८७

शब्द

अज्ञान वश नहीं तुमहि जाना, कैसे कोई जाने तुम्हें।
जहाँ वाणी मन की गम नहीं, कोई कैसे पहचाने तुम्हें॥
तुम रूपवान अरूप हो, तुम, आप जगत स्वरूप हो।
तुम आव भव निधि कूप हो, तुम चर अचर के भूप हो॥
अज्ञान भरम के जाल में, फंस कर तुम्हें जाना नहीं।
इस कठिन मोह की छाया में प्रभु तुमको पहिचाना नहीं॥

पद कमल सीस विराजिया, त्रय ताप सकल बिनासिया ।।
अधपाद पूरे नासिया प्रभु कीन्हा सहज उदासिया ।
मेरे अब तो अवगुन मेटिये, चरनों में मुझको लीजिए ।
राधास्वामी निज जानकर, पद पदम भक्ति दीजिए ।।
राधास्वामी !

मेरी अपनी ही आत्मा के अंश सत्संगी भाई और बहनो । इस शब्द में परम तत्व के अवतार दाता दयाल जी महाराज ने मनुष्य के सभी दुःखों सभी तापों का कारण एक ही बताया है । वह कारण है मनुष्य की अज्ञानता या ज्ञान का अभाव । वैसे तो संसार में कोई व्यक्ति ऐसा नहीं जिसे ज्ञान नहीं हो, क्योंकि साधारणतया ज्ञान का मतलब है जानना । पाँच इन्द्रियों का ज्ञान सब जीवों को होता है सभी आँखों से देखते हैं, कानों से सुनते हैं, त्वचा से स्पर्श करते हैं नाक से सूंघते हैं और जुबान से चखते हैं । यह ज्ञान तो सभी जीवों को होता है । मनुष्य भृष्टि का विशेष प्राणी होने के नाते, जब पढ़ता लिखता है, तो वह केवल ज्ञान इन्द्रियों का ही प्रयोग नहीं करता, बल्कि मन का प्रयोग करता है और बुद्धि का भी प्रयोग करता है । इन्द्रियों के ज्ञान को प्रत्यक्ष ज्ञान कहते हैं, क्योंकि वह साफ दिखाई देता है । चीज आपके सामने होती है उसे देख कर आपको उसके बारे में ज्ञान हो जाता है । इस प्रत्यक्ष ज्ञान में भूल की गुंजाइश रहती है । क्योंकि कभी सुनने में गल्ती हो सकती है और कभी देखने में भी गल्ती हो सकती है, परन्तु यह गल्ती होती तब है, जब हम अपने मन से जो चीज, दिखाई दे रही है उसमें कुछ और ही देख लेते हैं । मान लीजिए आपने किसी की बैठक में एक बहुत ही सुन्दर नारंगी को पड़ा हुआ देखा, आपने उसे नारंगी ही माना, परन्तु निकट से देखने पर आपको मालूम हुआ कि वह नारंगी नहीं बल्कि एक मिट्टी का खिलौना है । जब हम प्रत्यक्ष ज्ञान के साथ-साथ अपनी बुद्धि से अनुभव भी लगाते हैं, तो भूल हो जाती है । अनुमान भी एक प्रकार का ज्ञान है, जो हम अपने पिछले अनुभवों के आधार पर लगाते है अनुमान दूसरी प्रकार का ज्ञान है । तीसरे

प्रकार का ज्ञान शब्द ज्ञान है। शब्द ज्ञान का मतलब है दूसरे के शब्दों को सुन कर, ज्ञान हासिल करना, यदि आपने ताजमहल कभी नहीं देखा और आपको कोई आकर कहता है, 'अरे भाई ! ताजमहल बहुत ही सुन्दर है, वह संगमरमर का बना हुआ है, उसकी चार मीनारें हैं।' तो ताजमहल के बारे में आपका यह ज्ञान शब्द कहलायेगा साक्षी ज्ञान कहलायेगा। शब्द को साक्षी भी कहते हैं दाता दयाल जी ने कहा है !

'ज्ञान के तीन रूप हैं स्वामी, अनुभव है उनकी चोटी।
शब्द मिले, अनुमान मिले, अनुमान के साथ प्रमाण मिले ॥

अपना निजि अनुभव जो है, उसके बाद जो हमें ज्ञान मिलता है, वह सबसे अच्छा ज्ञान होता है सबसे सही होता है। जब हमें सच्चा ज्ञान मिलता है तो हम दुःख में भी दुःखी नहीं होते। जब ज्ञान में त्रुटि होती है, तो वह अज्ञान कहलाता है और उस अज्ञान के कारण हम दुःखी रहते हैं। जो ये तीन प्रकार के ज्ञान प्रत्यक्ष, अनुमान तथा शब्द ज्ञान है उन्हें तो मनुष्य जानता है ओर इनमें गल्ती होने पर मनुष्य उसको सुधारने की भी कोशिश करता है। परन्तु तीन प्रकार के ताप भी हैं य तीन ताप हैं शरीर का ताप या कष्ट, मन का ताप या शोक और आत्मा का अज्ञान। शरीर का रोग प्रायः खाने पीने में बेपरवाही करने से या स्वस्थता न रखने से होता है। तो हम रोग का कारण जानते हैं, परन्तु कभी कभी बिना कारण ही शरीर को रोग लग जाता है जैसा कि कैन्सर। अभी तक कोई नहीं बता सका कि इस रोग का कारण क्या है। यह मांसाहारी को भी होता है, शाकाहारी को भी। सिगरेट पीने वालों को भी होता है सिगरेट न पीने वालों को भी। स्त्रियों को भी होता है पुरुषों को भी, नवजवानों को भी होता है बूढ़ों को भी और नवजात शिशुओं को भी, पूर्वीय देशों में भी होता है और पश्चिमीय देशों में भी। इसका न तो कारण पता चला है और न ही इसका कोई विशेष इलाज है। प्रत्यक्ष में तो इसका

कारण पता नहीं चलता, परन्तु मैं समझता ड़ कि यह पूर्व जन्मों के कर्मों के कारण होता है क्योंकि यह केवल बुरे आदमियों को ही नहीं होता अच्छे आदमियों को भी होता है। जो लोग बहुत क्रोध करते हैं, उनको यह रोग अधिक होता है। परन्त सन्त तथा महासन्त भी इसका शिकार होते रहते हैं। परम हंस स्वामी रामकृष्ण कितने बड़े सन्त थे, कितने बड़े भक्त थे उन्हें भी कैन्सर हो गया। तो यहाँ मानना ही पड़ता है कि ऐसा भयंकर रोग जरूर पिछले जन्मों के कर्मों के कारण होता है।

शरीर के साथ-२ मन का शोक भी होता है या मन का ताप भी होता है। जब किसी रिश्तेतार की मृत्यु का समाचार मिला तो शोक छा गया। वैसे दुनियां में लाखों व्यक्ति रोज मरते हैं क्या आपको उनकी मृत्यु का शोक होता है ? क्या आप उस ताप से दुःखी हैं ? नहीं, नहीं ? शोक तो तभी होता है जब आपका कोई रिश्तेदार या जान पहचान का व्यक्ति मरता है। यही हालत हर्ष की है लाखों व्यक्तियों की रोज तरक्की होती है क्या आपको हर्ष तभी होता है जब आपके किसी रिश्तेदार या जान पहचान वाले की तरक्की होती है। आप अपने और पराये में अन्तर करते हैं यह आपका अज्ञान ही के कारण हैं। सन्त, परम सन्त भी कभी-२ दुःख का अनभव करते हैं परन्त जब असली ज्ञान हो जाता है कि शरीर के अन्दर जो खेल खेला जा रहा है और सुख दुःख- गर्मी सर्दी या लाभ हानि का अनुभव तभी होता है, जब हम अपनी सूरत अपनी विशुद्ध आत्मा को शरीर में लगा देते हैं या फंसा देते हैं और समझते हैं कि हमारी सुरत ये अनुभव कर रही हैं। परन्तु बास्तव में वह बात नहीं है। जब आप स्वप्न की हालत में जाते हैं, सुरत को शरीर से निकाल लेते हैं, तो आपके शरीर को सुख दुःख का अनुभव नहीं होता। जब कोई व्यक्ति सख्त जख्मी हो जाता है, उसकी हड्डी टूट जाती है, तो वह पीड़ा से चिल्लाता है। परन्तु जब वह बेहोशी की हालत में चला जाता है,

उसका चिल्लाना बन्द हो जाता है, उसको दुःख का अनुभव नहीं होता। क्यों ? क्योंकि उस समय सुरत शरीर में फँसी हुई नहीं होती।

इससे यह सिद्ध होता है कि शरीर का सुख दुःख और मन का हर्षशोक इस अज्ञान के कारण होता है कि हम अपने आप को मन समझ बैठते है या हमारी सुरत अपने को मन समझ बैठती है, या शरीर समझ लेती है जब तक सुरत मन और शरीर के भुलावे में रहती है, तो उसे अज्ञान के कारण सर्दी गर्मी तथा सुख दुःख का अनुभव होता है, जब सुरत अपने को शरीर तथा मन के सीमित दायरे से हटा लेता है, तो शरीर के सुख दुःख का आभास भी समाप्त हो जाता है। जब किसी को सख्त सिर दर्द होता है, तो उसे एसप्रीन दी जाती हैं ? इससे दर्द समाप्त हो जाता है। एसप्रीन क्या करती है ? वह दिमाग की उस नाड़ी को शून्य कर देती है जिससे हमें अपने शरीर के दर्द का आभास होता है। दूसरे शब्दों में, वह सुरत की धार को काट देती है। तो इससे क्या सिद्ध हुआ ? यही कि शरीर को सुख दुःख हर्ष-शोक का जो अनुभव होता है, वह इस अज्ञान के कारण होता है कि हमारी सुरत अपने को शरीर समझ लेती है या मन समझ लेती है यदि हमें सुरत और शरीर को मन के दायरे से ऊपर ले जाने का ज्ञान हो जाय तो सुख दुःख का अनुभव नहीं होगा। लोग मौत से डरते हैं कि नहीं। क्यों डरते है ? मौत तो कुछ है नहीं। शरीर वही होता है, ज्ञानेन्द्रियां वही होती हैं, केवल सुरत ने ही तो अपने आप को शरीर से अलग किया। इससे यह सिद्ध हो गया कि मौत तो केवल शरीर की होती है। शरीर खत्म हो जाता है, मन खत्म हो जाता है, परन्तु सुरत तो अमर है। जब इस बात का ज्ञान हो जाता हैं, तो मनुष्य मौत से डरता नहीं कई ऐसे अनुभव हुए हैं कि लोग मर कर फिर जिन्दा हो जाते हैं। ऐसी घटनाएं हमारे देश में भी घटी हैं और विदेशों में भी। अमेरिका के एक विख्यात मानसिक चिकित्सक डाक्टर मूडी ने एक किताब लिखी है, 'Life after Life' (जीवन के बाद जीवन) उसमें उन्होंने हस्पतालों में घूम-२ कर

लोगों के अनुभवों को लिखा है जो मर कर वापिस जिन्दा हुए हैं। सभी लोगों ने यही बताया है कि मौत आनन्द दायक चीज है। वे अब मौत से डरते नहीं, क्योंकि वे जा कर देख आए हैं कि मृत्यु आनन्द देने वाली है। जो प्रकाश हम समाधि में बंक नाल में देखते हैं ऐसे लोगों ने वैसे प्रकाश को देखा है। वे मौत को एक गहरी निद्रा मात्र ही समझते हैं।

जार्जरिची नाम का एक विख्यात अमरीकी मानसिक चिकित्सक लगभग तीन वर्ष पहले मर गया था। वह मर कर वापिस आया। उसने न तो भारतीय दर्शन पढ़ा है और न ही वह कोई आध्यात्मिक व्यक्ति था। वापिस जिन्दा हो जाने के बाद उसने अपने अनुभव बताए वह कहता है कि इस शरीर के बाद अन्नमय कोष है, फिर प्राणमय कोष है। इस पृथ्वी का भी जो ठोस अन्नमय कोष है उसके बाद प्राणमय कोष प्रकाशमय शरीर होता है, जो ठीक हमारे इस शरीर जैसे होता है। बिल्कुल वैसी ही नाक वैसी ही आँखें इत्यादि। यह प्राण तत्व का बना नमूना हमारे शरीर में होता है। विज्ञान कहता है कि वह एक ऐसे द्रव्य का बना होता है, जिसे एक्टोप्लाजमा कहते हैं, वह बहुत ही सूक्ष्म तत्व का होता है, उसकी फोटो भी ली जा चुकी है। मरने वाला व्यक्ति तीन दिन तक अपने प्राणमय कोष के शरीर में मौजूद रहता है, फिर वह इससे हट कर मनोमय कोष में चला जाता है, जो सूक्ष्म मानसिक तत्वों से बना होता है।

प्राणमय कोष में वह भूत प्रेत की तरह तीन दिन तक रहता है फिर वह मनोमय कोष में चला जाता है। अगर वह चाहे तो प्राणमय कोष में वापिस आ कर आपको स्वप्न में दिखाई दे सकता है। लेकिन मनोमय कोष में कोई रूप नहीं होता, मन की शक्ति से वह जैसा रूप चाहे बना लेता है। स्थूल जगत में जैसे उसके विचार रहे हैं ठीक वैसे विचार वह उत्पन्न कर देता है। स्थूल जगत में वह जैसा मकान छोड़ जाता है, मनोमय कोष में वह विचार से वैसा मकान बना लेता है।

अमेरिका में आर्थर फोर्ड नाम का एक बड़ा सिद्ध हुआ है १९७० में उसने शरीर छोड़ा और अपनी एक मित्र अमेरिका की विख्यात लेखिका रूप मंतगुमटी को लिखवाया। मैंने भी अपने अनुभव के आधार पर आपको बताया कि मनोमय कोष में जा कर, वह व्यक्ति जो किसी विशेष नाम से पुकारा जाता था, जो किसी का पुत्र था, किसी का भाई था, किसी का पति था, यह सब नहीं भूलता। वह चाहे तो मनोमय कोष में भी उसे गुरु मिल सकता हैं, वहां उसे अपना मन्दिर, अपना शिवालक, गिरजा, गुरुद्वारा या मसजित भी मिल सकती है। वह चाहे तो मनोमय कोष में सैंकड़ों वर्षों तक रह सकता है। वहाँ आ कर दूसरों की सहायता भी किया करते हैं। यह कहा जाता है न कि आपके स्वर्गीय पिताजी या दादा जी अभी भी आपकी रक्षा करते हैं। इस बात के कई प्रमाण मौजूद हैं, पूर्व में भी और पश्चिम में भी।

मनोमय कोष में जा कर एक बात स्पष्ट हो जाती है, जो कि जीवित काल में व्यक्ति को मालूम नहीं थी। उसे मालूम हो जाता है कि किस-२ जन्म में उसने कौन-२ सी भूलें कीं। दूसरों से ईष्या की, सद्गुरु की शरण में नहीं गया। इसलिये तीसरे दर्जे पर पहुंच कर, जीव फिर २ जन्म लेता है ताकि वह अपनी पिछली भूलों को सुधारे। अगर वह चाहे तो मनोकोष में गुरु भी प्राप्त कर सकता है और गुरु के ज्ञान से चौथे पद, जिसको विज्ञानमय कोष कहते हैं, जा सकता है। विज्ञानमय कोष प्रकाशमय जगत है, उसमें सब प्रकाश के शरीर होते है। विज्ञानमय कोष से ऊपर आनन्दमय कोष हैं, वहां जा सकता है। परन्तु आनन्दमय कोष में रहते हुए भी जीव परम तत्व तक नहीं पहुँच सकता। उसे फिर तपः लोक में जाना पड़ता है। तपः लोक में वह इन्तजार करता है कि यदि कोई परम सन्त आए, तो वह उसके साथ साथ ऊपर चला जाय। परन्तु इसमें बहुत प्रतिज्ञा करनी पड़ती है। इसलिए प्रायः मनुष्य फिर जन्म लेते हैं। जन्म लेने के बाद यदि मनुष्य को सद्गुरु मिल जाय और वह पूरी तरह से शरणागत हो जाय,

तो वह एक ही जन्म में मुक्त हो सकता है। आखरी मंजिल पर पहुंच जाता है।

वह परम तत्व, जिसका हम सब अंग हैं उसकी एक बूंद का सकल पसाटा है यह विश्व। इस विश्व का तो कहना ही क्या ब्रह्माण्ड का जो पहला दर्जा भौतिक शरीर का दर्जा है उसकी भी जांच पड़-ताल हमारी वाणी या मन पूरी तरह से नहीं कर सकते। आज तक विज्ञान के इतनी खोजे हुई, फिर भी आपके सारे शरीर की गुत्थी विज्ञान नहीं सुलझा सका। डाक्टर बड़े-२ आपरेशन क ते हैं दिल तक की सर्जरी करके बदल देते हैं, मुर्दों का जिन्दा कर देते हैं। लेकिन हैरानी की बात है कि छोटी सी जुकाम की बीमारी की गुत्थी को वे नहीं सुलझा पाए। डाक्टरों के पास इसका खास कोई इलाज नहीं। अमेरिका की बात है एक रोगी एक डाक्टर के पास गया बोला 'मेरा इलाज करो' डाक्टर बोला, 'भाई एसपरीन इत्यादि लेते रही और नारंगी का रस पीते रहो सात दिन में ठीक हो जाओगे। यदि दवाई नहीं भी लो तो एक हफ्ते में ठीक हो जाओगे।' मरीज क्रोध में बोला, 'लानत है तुम्हारे इस डाक्टरी विज्ञान पर, जो आज तक मामूली जुकाम की दवाई भी नहीं निकाल सका। इस पर डाक्टर बोला 'ठहरो भाई।' और उसने ठण्डे पानी से भरी एक बाल्टी मरीज के उपर डाल दी। सर्दी का मौसम था मरीज ठण्ड से कांपने लगा। डाक्टर बोला 'तुम कांप रहे हो मेरा खयाल है कि तुम्हें निमोनिया हो गया है। अब मैं तुम्हारा इलाज कर सकता हूं, क्योंकि मेरे पास इसका इलाज है।

जब विज्ञान मनुष्य के इस छोटे से शरीर को ही नहीं जान सकता तो वह कोटि-२ ब्रह्माण्डों के विषय में कैसे जान सकता है, हालांकि ये कोटि-२ ब्रह्माण्ड हमारे अन्दर ही मौजूद हैं और उसके पीछे जो विष्णु तत्व है, वह हमारी आकाश गगा को चला रहा है। उस परम तत्व को जानने का तरीका—अन्तिम तरीका सीधा साधा तरीका है

सत्संग-सत्संग-सत्संग। सदगुरु के पास बैठ कर बार बार उसका सत्संग सुनो।

सत्संग का सबसे आसान तरीका है सत्संग में पूरी तरह से शरणागत हो कर सदगुरु के बचनों को, शब्दों को सुनो। जिस प्रकार कोई भी संकट आने पर बच्चा सीधा माँ के पास जाता है, क्योंकि उसे भरोसा होता है कि माँ उसकी रक्षा करेगी, उसे बचा लेगी। ठीक उस बच्चे की तरह आप मुसीबत के समय सीधे गुरु की शरण में जाओ। सदगुरु माँ की तरह तुम्हें प्यार करेगा, तुम्हारी रक्षा करेगा। शुरू में भी शरणागत, मध्य में भी शरणागत और आखिर में भी शरणागत शरणागत, शरणागत-शरणागत। यही है एक मात्र तरीका भवसागर से पार जाने का। सब को साधास्वामी!

नाम

ले० फकीर चन्द जी महाराज

१. लेखक बचपन से ही शाश्वत शान्ति की प्राप्ति और ईश्वर या सचाई के जानने का जिज्ञासू था, अतएव दैव योग या मौज से उसका सतों से सम्पर्क हो गया।

२. परम सन्त महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज से भी लेखक को यही ख्याल मिला, जिन्होंने अपार दया करके इस पतित प्राणी को शरण दी।

३: हिन्दुओं के कुछ महापुरुषों की संगत से यह विशेष ख्याल उसके (लेखक के) हृदयांकित हो गया कि मनुष्य की समस्त आन्तरिक व बाह्य आपत्ति, विपत्ति और चिन्ताओं के दूर करने का एक मात्र उपाय

'नाम, है। यदि इसकी प्राप्ति हो जाय तो मनुष्य अपने जीवन के उच्च उद्देश्य को प्राप्त कर सकता है।

४. 'नाम' और असली शान्ति की प्राप्ति में सारा जीवन व्यतीत करके लेखक कुछ विशेष परिणामों पर पहुँचा है जिनको वह ईश्वर और नाम के विश्वासियों को विशेषतया उनके मंडल के लिये और साधारणतया जनता में प्रचार के लिये, पहुंचाना चाहता है। यह सत्य है कि असली शान्ति, आनन्द, स्वतन्त्रता और समृद्धि आदि असली 'नाम' से प्राप्त की जाती हैं बशर्ते कि 'नाम' किसी पूर्ण और सच्चे पुरुष से, जिसको सत्गुरु कहते हैं, मिला हो।

५. किन्तु असली 'नाम' क्या है ? वह लोग जिन्हें अपने शारीरिक मानसिक और आत्मि कष्टों को दूर करने के लिये 'नाम' की आवश्यकता है, इस नाम से अनभिज्ञ हैं। नामधारी आचार्यों के विभिन्न सम्प्रदायों की वतमान शिक्षा स्पष्ट नहीं है। मैं ऐसा क्यों कहता हूँ ? क्लोंकि बहुत से लोगों को, जिनसे मेरा सम्पर्क हुआ है या तो अपने तई या गुरुओं और अपने मार्ग के विरुद्ध शिकायत करते हैं। अत: प्रत्येक जाति, सम्प्रदाय और पंथ के वर्तमान आचार्यो द्वारा ऐसे व्यक्तियों की भलाई के ख्याल ने इन पंक्तियों के लिखने के लिये विवश किया।

६. यदि दुख व आपत्ति विपत्ति के पंजे में पड़ने से पहले 'नाम' ग्रहण कर लिया जाय और उसका अभ्यास किया जाय तो निस्सन्देह सब प्रकार के दुख आपत्ति विपत्ति आति बचने का एकमात्र उपाय ,नाम' है। इससे मनुष्य का पता कदापि न हो अर्थात वह आपत्तिग्रस्त तथा दुर्भागी न हो। यदि वास्तविक अर्थों में 'नाम' का अभ्यास किया जाय तो किसी व्यक्ति को दुर्भाग्य के कारण कोई कष्ट प्रतीत न होगा और न आपत्तियों का उस पर प्रभाव ही पड़ सकता है।

७. 'नाम' क्या है ? 'नाम' अनुभव है; दूसरे शब्दों में अपने स्वरूप का यथार्थ ज्ञान है कि मनुष्य क्या है।

आप आपको आप पहचानो। कहा और का नेक न मानो।
(रा० स्वा० दयाल)

अपने आपने जानने के लिये विशेष आदेशों का पालन करना अनिवार्य है, जिनके पालन से यह ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। इस ज्ञान के प्राप्त करने पर भी मनुष्य को उस ज्ञान पर निर्भर रहना पड़ता है। जो व्यक्ति इस ज्ञान के आश्रय रहता है केवल वही 'नाम' से लाभान्वित हो सकता है। विभिन्न धर्मों और असख्य अनुभवी महापुरुषों ने सहस्रों पुस्तकें 'नाम' के विषय पर लिखी हैं जिनके पीछे पड़े हुए लोग 'नाम' को जानने को तरस रहे हैं।

८. प्रत्यक्ष रूप में प्रत्येक व्यक्ति अपने को जीवन समझता है। इस जीवन के विषय पर अनेक कथायें और कल्पनायें थोरी) हैं, जिनका लेखक न खण्डन करता है और न मण्डल। उसको तो अपना निज अनुभव वर्णन करना है और जो उसने परम तत्व की खोज में और निज स्वरूप के जानने में प्रयत्न करके प्राप्त किया है। जीवन केवल एक बोध शक्ति है, जिसे ४ भागों में बाँटा जा सकता है—

(१) शारीरिक जीवन (२) मानसिक जीवन, (३) आत्मिक जीवन, (४) वह जीवन जो इन तीनों जीवनों का आधार है या वह जीवन जो इन तीनों जीवनों के बोध का भान कराता है।

(१) शारीरिक जीवन—यह देह बोध (Sensation) है। जीवन का बोध भौतिक पदार्थ, जिससे यह देह बना है, के अनुसार होगा। जलवायु और खाद्य पदार्थ जो माँ बाप ने गर्भ के समय खाये हों तथा वह पदार्थ, जिनको खाकर वह जीवन व्यतीत करता है, शारीरिक बोध में बहुत बड़ा कार्य करते हैं। देह के कष्ट, जिनसे लोग दुखी हैं, अनियमितता और प्रतिकूल भोजन अर्थात प्रकाश वायु, जल और साग सब्जी आदि के कारण से हैं केवल 'नाम' ऐसे व्यक्ति को, जो अनियमितता और प्रतिकूल भोजन से विकसित देह में रहता है किसी प्रकार शान्ति अथवा सुख चैन नहीं दे सकता। अतः

समस्त शारीरिक कष्टों से छुटकारा पाने या उनको दूर करने का सच्चा मार्ग यह है कि ऐसे ढंग से जीवन व्यतीत करे कि जिससे उसका जीवन स्वस्थ्य रह सके। यह समझ या ज्ञान तथा इसका अभ्यास नाम का एक अंग है। इसके लिये मुख्य नियम यह है—

(अ) **कम खाना**—स्वाद के लिये न खाओ किन्तु जीवित रहने के लिये खाओ। खाने के लिये मत जीओ।

(ब) **जीवन शक्ति (ब्रह्मचर्य) की रक्षा**—किसी व्यक्ति को अपनी जीवन शक्ति (Vitality) को जो शरीर को स्वस्थ्य, नीरोग अशांतमय अवस्था में रखती है, व्यर्थ नष्ट नहीं करना चाहिए।

कोई व्यक्ति चाहे 'नाम' का सुमिरन करे अथवा गुरुओं के पास जाय और उनके आदेशानुसार अभ्यास करे किन्तु जब तक वह अपनी जीवन शक्ति की रक्षा नहीं करेगा, उसके शारीरिक कष्ट दूर नहीं होंगे।

प्राचीन काल के महापुरुषों की रचनायें व हमारे ग्रन्थ विभिन्न रूपों में इस उपरोक्त कथन का समर्थन करते हैं।

(२) **मानसिक जीवन**—संकल्प से ही भौतिक पदार्थ की उत्पत्ति होती है। मन भी उन्ही तत्वों से बना है जिससे कि देह बना है। अन्तर केवल इतना है कि देह के बनाने वाले तत्व स्थल पदार्थ के होते हैं और मन के बनाने वाले तत्व सूक्ष्म पदार्थ के होते हैं जिस प्रकार स्वाद के वशीभूत अधिक खाने से शरीर की आरोग्यता नष्ट हो जाती है, ठीक उसी प्रकार मन रसिक विचारों पर, जो कामोत्तेजक हों या व्यर्थ की गपशप के हों ध्यान करने से अपनी आरोग्यता नष्ट कर बैठता है। मन के स्वास्थ्य को बनाये रखने के लिये संतों ने अजपा जाप का साधन बताया है जिसका प्रयोजन कम और श्रेष्ठ बातों का सोचना है।

जो कामोत्तेजक विचारों के ध्यान में निमग्न रहता हो अथवा

मानसिक व्यभिचारी हो अथवा जो अनावश्यक बातों पर मनन करता है, वह वास्तविक मानसिक शान्ति कभी प्राप्त नहीं कर सकता। हाँ, अन्त में आपत्ति विपत्ति का शिकार अवश्य होगा।

लेखक ने इस कहावत—'जैसा बोओगे वैसा काटोगे' का अनुभव अनेकों प्रकार से किया है और इसे सच पाया है। यहाँ बोने से अभिप्राय सोचने से है।

दूसरों से घृणा करना, दूसरों की चुगली करना और दूसरों का बुरा सोचने का वास्तविक अर्थ यही है कि उन विचारों का बीज हम अपने अन्दर में बोयें और अनजान रूप से उनका फल पायें। विचार स्वयं हमारे कार्यों से अधिक शक्तिशाली है क्योंकि यह स्थूल भौतिक पदार्थ का उत्पन्न करने वाला है। अतः अनुचित विचार और मलिन व गंदी बातों के ध्यान से मनुष्य पर आपत्तियाँ आती हैं। इसलिये सतों ने निम्नलिखित नियम निर्धारित किये हैं—

इतना सोचो जिससे प्रयोजन सिद्ध हो। इतना खाओ जितने से आवश्यकता की पूर्ति हो। इतना काम करो जिससे प्रयोजन पूरा हो सके अथवा वही सोचो जो आवश्यक और लक्ष्य तक हो।

जिन्होंने नाम का आश्रय लिया है, यदि वे उपरोक्त सिद्धान्तों का पालन नहीं करते तो उनको कुछ प्राप्त नहीं होगा। वे वास्तव में अपने आपको नष्ट-भ्रष्ट कर लेंगे, क्योंकि जब नाम द्वारा उनकी वासनायें पूरी होगी, तो यह उनके अपके अज्ञान का कारण होगा, तो वह या तो संतों के बारे में बुरा भला सोचेंगे।या घृणित भावों से उनकी शिक्षा की शिकायत करेंगे। अन्त में विचार की फिलोसफी के अनुसार उनके अपने विचार ही उन्हें नष्ट भ्रष्ट कर देंगे।

वर्तमान समय के लोग विचार की शक्ति से नितान्त 'अनभिज्ञ हैं। विचार क्या है इस विषय पर लेखक दूसरे प्रकरण में संक्षिप्त रूप में वर्णन करने का प्रयत्न करेगा।

——

द्वितीय प्रकरण

विचार

वर्तमान विज्ञान अणुओं यानी एक प्रकार की शक्ति (energy) तक पहुंचा है जो ब्रह्माण्ड व्यापी स्थूल पदार्थ का उत्पन्न करने वाली हैं। अब लेखक का यह कहना है कि पाठक अपनी उत्पत्ति के विषय पर विचार करें। तुम अपनी माँ के गर्भ में प्रवेश करने से पहले अपने पिता के मस्तिष्क में वीर्य के कीटाणु थे। वह कीटाणु उस भोजन से बने जो तुम्हारे पिता ने खाया और पिता ने खाया और जिससे रक्त और वीर्य बना। यह खाद्य पदार्थ पृथ्वी से प्राप्त किये गये थे। गर्मी और प्रकाश के बिना पृथ्वी खाद्य पदार्थ उत्पन्न नहीं कर सकती। सूर्य और अन्य तारागण गर्मी और प्रकाश के मूल उदगम हैं। इस प्रकार तुम्हारा शारीरिक जीवन वास्तविक रूप से स्थूल पदार्थ से मिला हुआ गर्मी और प्रकाश है और शारीरिक इन्द्रियों को उत्पन्न करता हैं। तुम्हारा मन ही तुम्हारे शरीर का रचने वाला है। उसी प्रकार ब्रह्माण्डी मन, जो ज्योति स्वरूप कहलाता है और सारी सृष्टि का रचने वाला है, स्थूल पदार्थों (पंच महाभूतों) को उत्पन्न करता है। इसलिये मनुष्य जो कुछ मन की एकाग्र अवस्था में सोचता है, चाहे वह वह क्रोध की सूरत में हो अथवा प्रसन्नता के रूप की दशा में हो, उसका वैसा ही प्रभाव अवश्य उत्पन्न होगा, क्योंकि विचार जो एक शक्ति है स्थूल पदार्थ में बदल जाती है। अतएव जो व्यक्ति जो कुछ बोवेगा वैसा ही वह काटेगा अथवा जैसा तुम सोचोगे वैसे सी बनोगे। तुमको इन बातों का भली प्रकार ज्ञाता समझ कर लेखक यह आशा करता है कि तुमने मेरे मतव्य को समझ लिया होगा। लेखक ने पूर्णतया यह अनुभव कर लिया है कि जो कुछ हम पर या सृष्टि पर गुजरती या पड़ती

है । वह हमारे अपने ही विचारों का फल है ।

कोई व्यक्ति जो अपनी अन्तरीय गर्मी और शक्ति (energy) को इतना विकसित कर सकता है कि ज्योतिस्वरूप की सीमा तक लेआये, तो वह अपनी इच्छानुसार स्थूथ पदार्थ को बदग देने की शक्ति प्राप्त कर सकता हैं अर्थात उसमें और ज्योतिस्वरूप में कोई अन्दर नहीं रहता ।

हमारे पुर्वज इसी प्रकार का साधन किया करते थे जिसको उन्होंने गायत्री मंत्र का नाम लिया था । सन्तों ने इसी को दूसरे ढंग से वर्णन किया है अर्थात अपने आपे (अपनी सुरत) को दोनों भौंओं के मिलाप स्थान से थोड़ा ऊपर सहसदल कंवल पर एकाग्र करना है ।

लेखक का निज अनुभव भी इस बात का विश्वास दिलाता है कि जो व्यक्ति अपनी गर्मी व प्रकाश को उचित स्थान पर लाकर पूर्णतया एकाग्र हो जाता है, वह जो कुछ इच्छा करेगा, उसे पूर्ण हुई पायेगा ।

मनुष्य किस प्रकार की कामनायें या इच्छायें रक्खे, यह ऐसा प्रश्न है जो यहाँ निर्णय नहीं किया जा सकता । प्रत्येक व्यक्ति की इच्छायें दूसरी वस्तुओं के साथ वाह्य सम्बन्ध के कारण अलग अलग हुआ करती हैं । यह अधिक श्रेष्ठ होगा कि मनुष्य किसी पूर्ण पुरुष से सम्बन्ध स्थापित किये रहे । तुमको समझने की दृष्टि से अपने नित्य प्रति के अनुभवों में से एक उदाहरण गलत इच्छा का दिया जाता है ।

एक वार जवलतुर से तार विभाग के एक इन्स्पैक्टर मय अपनी स्त्री व ३ बच्चों के लेखक के पास आये । उनकी स्त्री योगाभ्यास किया करती थी । स्वास्थ्य की दृष्टि से वह दुर्बल थी और बच्चों को नियंत्रण में नहीं रख सकती थी । वह लेखक पर विश्वास रखती थी । उसने सत्संग में तीन बार इस इच्छा से यह प्रर्थना की कि उसके पति से बच्चों की देख भाल करने को कह दिया जाय, क्योंकि बच्चों के देख भाल में समय नष्ट करने से वह अपना सारा समय शास्वत शान्ति के प्राप्त करने के लिये जो उसके जीवन का ध्येय था, चित्तवत को

एकाग्र करने में लगाना अधिक श्रेष्ठ समझती थी। उस पति के सिर पर अनेकों जिम्मेदारियां थीं। वह स्त्री की इच्छानुसार कार्य करने में असमर्थ था। विचार शक्ति का ज्ञाता और प्राकृतिक नियम का अनुभवी होने के कारण लेखक ने अपने एक मित्र पं० बलीराम से कहा कि इस स्त्री के बच्चे अवश्य नष्ट हो जायेंगे। वही बात हुई कि नौ मास के अन्दर उसके तीनों बच्चे काल का ग्रास बन गये। अतः इच्छा करने का यह गलत तरीका है। निश्चय ही प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन की उन्नति के लिये श्रेष्ठतर और उद्देश्य तक ही सोचना चाहिये। इस उद्देश्य की पूर्ति का उचित मार्ग यह है कि यथेष्ठ समय सत्संग में लगाया जाय।

तृतीय प्रकरण

आत्मिक जीवन—जीवन के बोध (Sensation of life) के अतिरिक्त जिस को लेखक ने ऊपर वर्णन किया है, एक और जीवन है जहाँ शरीर या मन का बोध नहीं है। उस जीवन में विचार नहीं रहता और वह शरीर और मन के बोध से स्वतन्त्र है। जब कोई व्यक्ति शारीरिक व मानसिक इन्द्रियों का अनुभव करते करते अभ्यास हो जाता है तो उसके लिये ऐसी अवस्था की अभिलाषा स्वाभाविक हो जाती है जहां कि उसे पूर्ण विश्राम मिले, जैसे कि दिन भर के कठिन परिश्रम के पश्चात मनुष्य गहरी नींद का आनन्द उठाना चाहता है। जैसे मानसिक व शारीरिक कठिन परिश्रम के पश्चात एक व्यक्ति के लिये गहरी नींद की इच्छा स्वाभाविक होती है ठीक उसी प्रकार ऐसी अवस्था की खोज जहाँ कि उसे शारीरिक व मानसिक पूर्ण विश्राम मिल

सके स्वाभाविक होती है अर्थात शारीरिक व मानसिक इन्द्रियों की पहुंच के परे जाना है जो आत्मि ज्ञान की ओर पहला कदम है।

जब तक कोई व्यक्ति ठीक इतना कार्य नहीं करता कि वह शारीरिक व मानसिक थकान का भान न करने लगे, वह गहरी नींद का का आनन्द नहीं उठा सकता। ठीक इसी प्रकार एक व्यक्ति जिसको अपने शारीरिक व मानसिक जीवन में सच्ची मानसिक व आत्मिक शान्ति प्राप्त नहीं होती और माया के खेल खेलते हुये पूर्णतया उकता नहीं जाता, वह अध्यात्म (रूहानियत) की जो शान्ति और आनन्द का भन्डार है, जिज्ञासा नहीं कर सकता।

इसलिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि कोई व्यक्ति गलत धारणा में पड़कर आत्मिक मार्ग पर चलने का प्रयत्न न करे; क्योंकि उसके सारे प्रयत्न उस समय तक व्यर्थ सिद्ध होंगे जब तक कि उसने तथ्य, असलियत अथवा अध्यात्म की प्राप्ति की प्रारम्भिक सीढ़ियों को पार न कर लिया हो। पुस्तकों की सहायता से आध्यात्म (रूहानियत) या सत मार्ग की खोज या प्राप्ति की आशा करना निरी मूर्खता है। चूँकि पाठक लेखक के भावों को पूर्ण रूप से नहीं समझ सकते, अतः प्रत्येक व्यक्ति को प्रारम्भ में इस मार्ग में प्रवेश करने से पहले देह, मन और आत्मा का यथेष्ठ अनुभव प्राप्त कर लेना चाहिए अन्यथा ऐसे पाठक भ्रम में पड़ जाते हैं और इस तरह कष्ट भोगते हैं।

हमारे पूर्वजों ने अध्यात्म में पूर्णता प्राप्त करने पर मानव जीवन को चार भागों में बाँटा है जो आश्रम कहलाते हैं। अर्थात ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास। प्रत्यक्ष में मुख्य विचार यह था कि पहला आश्रम अर्थात ब्रहचर्य को सफलता पूर्वक पूर्ण करने पर जीवन के अन्य आश्रमों में मनुष्य कदापि असफल न होगा। स्पष्ट रूप से कहने के लिये तथा मुख्य प्रसंग को छोड़कर यह संकेत किया जाता है कि वर्तमान सन्तान मानसिक ब्रह्मचर्य का पालन नहीं कर रही इसलिये बहुत से युवक भक्त दिखाई दे रहे हैं।

कुछ लोगों का बिचार है कि आध्यात्मिक मार्ग पर चलते हुए उनको सब प्रकार की सांसारिक सुविधायें प्राप्त हो जायेंगी, मगर ये उनकी बड़ी भारी भूल है। यदि कोई सांसारिक उन्नति का इच्छुक है, तब उसको यह सीखना चाहिए कि सोचने, काम करने और जीवन व्यतीत करने के उचित नियम क्या हैं। अध्यात्म सम्बन्धी कोई शिक्षा ऐसे व्यक्ति को कोई सांसारिक शान्ति या लाभ नहीं पहुंचा सकती, जब तक उसको इस बात का सच्चा ज्ञान न हो कि अपने आप को अर्थात अपने देह मन और विचार को किस प्रकार संयम में करें। इसके लिए किसी पूर्ण पुरुष के पथ प्रदर्शन की आवश्यकता है।

जिस तरह एक विद्यार्थी को उसके विद्यार्थी जीवन में उसकी सफलता के लिए एक पूर्ण गुरु की आवश्यकता है, केवल पुस्तकें सहायता नहीं कर सकती, ठीक इसी प्रकार एक आत्म ज्ञान के विद्यार्थी के लिये जब तक उसे असली ज्ञान, नाम या सार अनुभव प्राप्त हो, एक पूर्ण आध्यात्मिक गुरु के पथ-प्रदर्शन की अत्यन्त आवश्यकता है। लेखक यहाँ बहुत सी युक्तियाँ वर्णन कर सकता था, किन्तु इस बात का भय है कि वे युक्तियाँ पाठकों को पथ-भ्रष्ठ न कर दें। चूँकि प्रत्येक व्यक्ति की परिस्थितियाँ भिन्न भिन्न होती हैं, इसलिये उपाय भी भिन्न-भिन्न होने चाहिये। इसलिये सन्त मत में ठीक-ठीक पथ प्रदर्शन के लिए जीवित गुरुओं पर जोर दिया जाता है।

चतुर्थ जीवन—यह जीवन की अवस्था है, जहाँ ऊपर वर्णन किये गये तीनों जीवन, असली जीवन के साथ जो तीनों जीवनों के भान बोध का साक्षी है, एक नियमित ढंग में तथा अनुरूप (Harmony) अवस्था में काम करते हैं ताकि इनको शान्ति की अवस्था में लाये, जहाँ कोई कष्ट है न भ्रम।

उपर की सूक्ष्म व्याख्या को दृष्टि में रखकर लेखक आप सबसे हार्दिक रूप से चाहता है कि मानव जाति के कष्टों और विपत्तियों को दूर करने के लिये कबीर, नानक राधास्वामी दयाल और दाता दयाल तथा अन्य सन्तों की सच्ची शिक्षा का संसार में प्रचार करें।

''मनुष्य बनो'' (हिन्दी मासिक पत्र) समाचारपत्र (केन्द्रीय) अधिनियम १९५६ नियम ८ फार्म ४ के अनुसार आपेक्षित आवश्यक सूचना

१—प्रकाशन का स्थान	:	अलीगढ़
२—प्रकाशन अवधि	:	मासिक
३—मुद्रक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
क—राष्ट्रीयता	:	भारतीय
ख—पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़ । उत्तर प्रदेश
४—प्रकाशक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़
५—सम्पादक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता		भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़
६—स्वत्वाधिकारी	:	श्रीमती सुधा मीतल
सरक्षक	:	परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

७—मैं सुधा मीतल घोषित करती हूं कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी और विवरण के अनुसार सही है ।

दिनांक १५ सितं, १९८६

सुधा मित्तल

प्रकाशक के हस्ताक्षर

Regd. No. L-ALG. 28

मिलने का पता :—
'मनुष्य बनो' कार्यालय
शिव भवन, लेखराज नगर
अलीगढ़–२०२००१ (उ० प्र०)

अवैतनिक सहायक सम्पादक :
महेशचन्द्र मीतल
सम्पादक, व्यवस्थापक व प्रकाशक :
श्रीमती सुधा मीतल

ग्राहक संख्या— 146

श्रीमान् Gajraj myskar
H No. 5-4-103, Rathod Building
Pochammagally
Nizamabad
AP

मुद्रक : श्रीमती सुधा मीतल, दातादयाल प्रिंटर्स, लेखराजनगर, अलीगढ़।